Postal Reg. No.GDP -45/2020-2022

अल्लाह तआला का आदेश

وَلِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ۚ يَغْفِرُ لِمَنْ يَّشَآءُ وَيُعَذِّبُ مَنْ يَّشَآءُ ۚ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ۔

(सूरत आले-इम्रान आयत :130)

अनुवाद: और अल्लाह ही का है जो आकाशों और ज़मीन में है वह जिसे चाहता है क्षमा कर देता है और जिसे चाहता है आज़ाब देता है और अल्लाह बहुत क्षमा करने वाला और बार बार रहम करने वाला है।

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡدِ

وَلَقَدۡ نَصَرَکُمُ اللّٰہُ بِبَدۡرٍ وَّاَنۡتُمۡ اَذِلَّۃٌ

वर्ष 5

साप्ताहिक क़ादियान

बदर

Weekly BADAR Qadian HINDI

अंक 22

संपादक शेख़ मुजाहिद अहमद

मूल्य 500 रुपए वार्षिक

4 शव्वाल 1441 हिजरी कमरी 28 हिजरत 1399 हिजरी शमसी 28 मई 2020 ई.

अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल;ल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दोलिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण अपना फ़जल नाज़िल करे। आमीन

दुआ से अज़ाब टल जाता है और हज़ारों क्या समस्त काम दुआ से निकलते हैं। यह बात याद रखने के योग्य है कि अल्लाह तआला का समस्त चीज़ों पर सम्पूर्ण अधिकार है। वह जो चाहता है करता है।

मुझे यह देखकर बहुत अफ़सोस होता है कि आजकल इबादत और तक़्वा और धर्म से मुहब्बत नहीं है। इबादत में जिस प्रकार का आन्नद आना चाहिए वह नहीं आता, वे लोग जो अल्लाह तआला की इबादत में आन्नद और मज़ा नहीं पाते उन को अपनी बीमारी की चिन्ता करनी चाहिए।

उपदेश सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम

मुबारक वह है जो कामयाबी और ख़ुशी के समय तक़्वा से काम ले

अक्सर लोगों के हालात किताबों में लिखे हैं कि आरम्भ में दुनिया से सम्बन्ध रखते थे और बहुत अधिक सम्बन्ध रखते थे लेकिन उन्होंने कोई दुआ की और वह दुआ क़बूल हो गई। इस के बाद उनकी हालत ही बदल गई, इसलिए अपनी दुआओं की क़बूलीयत और सफलताओं पर गर्वित न हो बल्कि ख़ुदा के फ़ज़ल और इनायत की क़दर करो। नियम है कि कामयाबी पर हिम्मत और हौसला में एक नई ज़िन्दगी आ जाती है इस ज़िन्दगी से लाभ उठाना चाहिए और इस से अल्लाह तआला की मार्फ़त में तरक़्क़ी करनी चाहिए क्योंकि सबसे उच्च स्तर की बात जो काम आने वाली है वह यही इलाही मार्फ़त है और यह ख़ुदा तआला के फ़ज़ल तथा रहम पर ग़ौर करने से पैदा होती है। अल्लाह तआला के फ़ज़ल को कोई रोक नहीं सकता। बहुत ग़रीबी भी इन्सान को मुसीबत में डाल देती है। इसलिए हदीस में आया है

اَلْفَقْرُ سَوَادُ الْوَجْهِ۔

ऐसे लोग ख़ुद मैंने देखे हैं जो अपनी ग़रीबी के कारण से नास्तिक हो गए हैं मगर मोमिन किसी तंगी पर भी ख़ुदा से बदगुमान नहीं होता और इस को अपनी ग़लतियों का नतीजा क़रार दे कर इस से रहम और फ़ज़ल का निवेदन करता है और जब वह ज़माना गुज़र जाता है और इस की दुआएं सफल होती हैं तो वह इस विनम्रता के ज़माना को भूलता नहीं बल्कि उसे याद रखता है। अत: अगर इस पर ईमान है कि अल्लाह तआला से काम पड़ना है तो तक़्वा का तरीक़ा धारण करो। मुबारक वह है जो सफलता और ख़ुशी के वक़्त तक़्वा धारण कर ले और बदक़िस्मत वह है जो ठोकर खा कर उस की तरफ़ न झुके।

तक़रीर हज़रत अक़्दस अलैहिस्सलाम

18 जनवरी 1898 ई

तक़्दीर

तक़्दीर दो किस्म की होती है। एक का नाम मुअल्लक़ है और दूसरी को मुबरम कहते हैं। अगर कोई तक़्दीर मुअल्लक़ हो तो दुआ और सदक़ात उस को टला देते हैं और अल्लाह तआला अपने फ़ज़ल से इस तक़्दीर को बदल देता है। और मुबर्रम होने की अवस्था में वह सच्चाई और दुआ इस तक़्दीर के बारे में कुछ लाभ नहीं पहुंचा सकते। हाँ वह व्यर्थ और फ़ुज़ूल भी नहीं रहते क्योंकि यह अल्लाह तआला की शान के ख़िलाफ़ है। वह इस दुआ और सच्चाई का असर और नतीजा किसी दूसरे ढंग में इस को पहुंचा देता है। कुछ अवस्थायों में ऐसा भी होता है कि ख़ुदा तआला किसी तक़्दीर में एक वक़्त तक ठहराव और देरी डाल देता है।

क़ज़ाए मालिक और मुबरम का स्रोत और पता क़ुरआन करीम से मिलता है। यह शब्द यद्यपि नहीं। जैसे क़ुरआन करीम ने फ़रमाया है।

اُدْعُوْنِيْٓ اَسْتَجِبْ لَكُمْ (अल-मोमिन:61) अनुवाद : दुआ माँगो। मैं स्वीकार करूँगा। अब यहां से मालूम होता है कि दुआ क़बूल हो सकती है। और दुआ से अज़ाब टल जाता है और हज़ारों क्या समस्त काम दुआ से निकलते हैं। यह बात याद रखने के योग्य है कि अल्लाह तआला का समस्त चीज़ों पर सम्पूर्ण अधिकार है। वह जो चाहता है करता है। इस के छुपे हुए तसर्रुफ़ात की लोगों को चाहे ख़बर हो या न हो मगर सैंकड़ों तजुर्बा वालों के वसीअ अनुभव और हज़ारों दर्दमंदों की दुआ के स्पष्ट नतीजे बतला रहे हैं कि इस का एक पोशीदा और छुपा हुआ तसर्रुफ़ है। वह जो चाहता है मिटा देता है और जो चाहता है स्थापित करता है। हमारे लिए यह बात ज़रूरी नहीं कि हम उस की तह तक पहुंचने और इस के भेद और कैफ़ीयत मालूम करने की कोशिश करें। जबकि अल्लाह तआला जानता है कि नष्ट होने वाली है। इस लिए हम को झगड़े और मुबाहिसों में पड़ने की ज़रूरत नहीं। ख़ुदा तआला ने इन्सान की क़ज़ा तथा क़द्र को शर्त के साथ भी कर रखा है जो तौबा, विनय तथा विनम्रता ,से टल सकती है। जब किसी किस्म की तकलीफ़ और मुसीबत इन्सान को पहुँचती है तो वह फ़ित्रतन और कुदरती तौर पर उत्तम कर्मों की तरफ लौटता है। अपने अंदर एक दुख और वेदना महसूस करता है जो उसे बेदार करता और नेकियों की तरफ़ खींचे लिए जाता है और गुनाह से हटाता है। जिस तरह पर हम दवाइयों के प्रभाव को तजुर्बे के माध्यम से पा लेते हैं इसी तरह पर एक व्याकुल इन्सान जब ख़ुदा तआला के आस्ताना पर निहायत विनय और विनम्रता के साथ गिरता है और रब्बी रब्बी कह कर उस को पुकारता है और दुआएं मांगता है तो वो रोयाए सालेहा या इलहाम सहीहा के माध्यम से एक बशारत और तसल्ली पा लेता है। हज़रत अली करमहुल्लाह वजहा फ़रमाते हैं कि जब सब्र और सिदक़ से दुआ इंतिहा को पहुँचेगी तो वह क़बूल हो जाती है। दुआ, सदक़ा और ख़ैरात से अज़ाब का टलना ऐसी प्रमाणित सच्चाई है जिस पर एक लाख चौबीस हज़ार नबी की सहमति है और करोड़ों सुलहा और मुत्तकी और अल्लाह तआला के औलिया के व्यक्तिगत तजुर्बे इस बात पर गवाह हैं।

इबादात में लज़्ज़त और आन्नद रखा गया है

नमाज़ क्या है? यह एक ख़ास दुआ है मगर लोग इस को बादशाहों का टैक्स समझते हैं। नादान इतना नहीं जानते कि भला ख़ुदा तआला को इन बातों की क्या आवश्यकता है और इस की ज़ाती ग़िना को इस बात की क्या आवश्यकता है कि इन्सान दुआ,तस्बीह और तहलील में व्यस्त हो बल्कि इस में इन्सान का अपना ही लाभ है कि वह इस तरीक़ा पर अपने लक्ष्य को पहुंच जाता है। मुझे यह देखकर बहुत अफ़सोस होता है कि आजकल इबादत और तक़्वा और धर्म से मुहब्बत नहीं है। इस

शेष पृष्ठ 12 पर

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - निगरान बदर बोर्ड क़ादियान

सय्यदना हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफतुल मसीह अल्ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ का यूरोप का सफर, सितम्बर अक्तूबर 2019 ई (भाग-5)

अगर तुम्हारे माँ बाप की इच्छा है कि तुम मुरब्बी बनो और तुम्हारा interestहै कि तुम डाक्टर बनो तो डाक्टर बन जाओ

अगर इंजीनियर बनने का शौक़ है तो इंजीनियर बन जाओ, lawyer बनने का शौक़ है तो lawyer बन जाओ या अगर कोई और काम करना है तो आज्ञा लेकर कर सकते हो,बेशुमार वाक़फ़ीन नौ हैं, प्रत्येक तो जामिया में जा भी नहीं सकता और जाते भी नहीं

हाँ माँ बाप की इच्छा होती है कि मुरब्बी बने, लेकिन पहली choice तुम्हारी है,अगर तुम्हारा दिल चाहता है या तुम्हारे पास options हैं और तुम्हें नहीं पता कि क्या बनना है तो फिर पहली option मुरब्बी की होनी चाहिए,फिर डाक्टरज़ हैं, टीचरज़ हैं और जो दूसरे विभाग हैं उनको ले सकते हो।

वाकफ़ीन नौ बच्चों की क्लास में हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ की बच्चों को सुनहरी नसीहतें

एक धार्मिक जमाअत और एक धार्मिक इन्सान होने की हैसियत से यह हमारी ज़िम्मेदारी है कि हम अपने धर्म की तब्लीग़ करें

अत: जिन को यह धर्म पसंद आता है वे इस तरफ़ आ जाते हैं, हमें उम्मीद है कि लोग आएँगे,सिर्फ़ हॉलैंड में ही नहीं बल्कि सारे देशों में अगर यह नस्ल नहीं तो अगली नस्ल इस्लाम की तरफ़ आएगी,हम इस हवाला से बहुत आशावादी हैं कि लोग इस्लाम स्वीकार कर लेंगे और अपने ख़ालिक़ के हो जाऐंग।

अलमेरे में मस्जिद बैयतुल आफियत के उद्घाटन के अवसर पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला की प्रैस कान्फ्रैंस

(रिपोर्ट: अब्दुल माजिद ताहिर, एडिशनल वकीलुत्तबशीर लंदन)

(अनुवादक: शेख मुजाहिद अहमद शास्त्री)

30 सितम्बर 2019 ई दिनांक सोमवार (बाक़ी रिपोर्ट)

7 बजे वाकफ़ीन नौ बच्चों की क्लास हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ के साथ शुरू हुई

वाकफ़ीन नौ बच्चों की क्लास

प्रोग्राम का आरम्भ तिलावत क़ुरआन करीम से हुआ जो प्रिय अली शहरयार ने की। इसका उर्दू अनुवाद प्रिय ताहा शकील ने प्रस्तुत किया। इसके बाद प्रिय नदीम अहमद आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की मुबारक हदीस का अरबी मतन प्रस्तुत किया जिसका निम्नलिखित उर्दू अनुवाद प्रिय मसरूर अहमद ने प्रस्तुत किया।

हज़रत अबू हुरैरह वर्णन करते हैं कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने बताया कि अल्लाह तआला फ़रमाता है कि मेरा बंदा मेरा इन्कार करता है हालाँकि उसे ऐसा नहीं करना चाहिए। वह मुझे गालियां देता है हालाँकि उसे ऐसा करने का हक़ नहीं था। मुझे झठलाने से अभिप्राय यह है कि वह कहता है अल्लाह तआला हमें दोबारा इस तरह पैदा नहीं कर सकता जिस तरह उसने हमें पहले पैदा किया है और मुझे गाली देने का अर्थ यह है कि वह कहता है अल्लाह तआला ने किसी को अपना बेटा बनाया है। हालाँकि मेरी ज़ात समद अर्थात बेनयाज़ है और न मेरा कोई बेटा है और न मैं पैदा किया गया हूँ। अर्थात न मैं किसी का बेटा हूँ और न ही मेरा कोई बराबर हो सकता है।

(मस्नद अहमद, भाग नम्बर 2 पृष्ठ 317)

इस के बाद प्रिय ख़ुर्रम शहज़ाद ने हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का निम्नलिखित उद्धरण प्रस्तुत किया।

हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं

"अत: चूँकि सनातन से और जब से कि दुनिया पैदा हुई है ख़ुदा का शनाख़्त करना नबी के शनाख़्त करने से जुड़ा है इसलिए यह ख़ुद ग़ैर-मुमकिन और असम्भव है कि नबी के अतिरिक्त तौहीद मिल सके। नबी ख़ुदा की सूरत देखने का आईना होता है इसी तरह आईना के द्वारा से ख़ुदा का चेहरा नज़र आता है। जब ख़ुदा तआला अपने आप को दुनिया पर प्रकट करना चाहता है तो नबी को जो उस की क़ुदरतों का मज़हर है, दुनिया में भेजता है और अपनी वह्य इस पर नाज़िल करता है और अपनी रबूबियत की ताक़तें उस के द्वारा दिखलाता है। तब दुनिया को पता लगता है कि ख़ुदा मौजूद है। अत: जिन लोगों का वजूद ज़रूरी तौर पर ख़ुदा के सनातन क़ानून की दृष्टि से ख़ुदा को पहचानने के लिए निर्धारित हो चुका है उन पर ईमान लाना तौहीद का एक भाग है और उस ईमान के अतिरिक्त तौहीद सम्पूर्ण नहीं हो सकती। क्योंकि संभव नहीं कि बिना इन आसमानी निशानों और क़ुदरत दिखाने वाले आशचर्यों के जो नबी दिखलाते हैं और मार्फ़त तक पहुंचाते हैं वह ख़ालिस तौहीद जो विश्वसनीय यक़ीन के स्रोत से पैदा होती है उपलब्ध हो सके। वही एक क़ौम है जो ख़ुदा दिखाने वाली है। जिनके द्वारा से वह ख़ुदा जिसका वजूद सूक्ष्म से सूक्ष्मतर और भेद से भेद वाला और ग़ैब वाला है, प्रकट होता है। और हमेशा से वह छुपा ख़जाना जिसका नाम ख़ुदा है नबियों के द्वारा से ही शनाख़्त किया गया है। वर्ना वह तौहीद जो ख़ुदा के निकट तौहीद कहलाती है, जिस पर अनुकरणीय रंग सम्पूर्ण तौर पर चढ़ा हुआ होता है इस का प्राप्त होना नबी के बिना जैसा कि अक़ल के ख़िलाफ़ है वैसा ही सालकीन के अनुभव के ख़िलाफ़ है।"

(हकीकतुल वह्य, रुहानी ख़ज़ायन, भाग 22 पृष्ठ 115-116)

इसके बाद प्रिय हसन महमूद ने हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की नज़्म

हम्द व सना उसी को जो ज़ात जावेदानी
हमसर नहीं है उस का कोई न कोई सानी

मैं से चुने हुए अशआर अच्छी आवाज़ में पढ़ कर सुनाए।

इस के बाद प्रिय नूर अहमद रज़ा और प्रिय हमज़ा इब्तिसाम ने "हस्ती बारी तआला" के विषय पर अपना निबन्ध प्रस्तुत करते हुए विभिन्न तर्क दिए। इस के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला ने वाकफ़ीन नौ बच्चों को सवाल करने की आज्ञा प्रदान फ़रमाई

एक बच्चे ने सवाल किया कि अल्लाह तआला ने यह दुनिया क्यों बनाई है? इस के जवाब में हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: अल्लाह तआला की इच्छा है। तुम काग़ज़ की क्षति बनाते हो? तुम्हारा दिल चाहता है तो बनाते हो। तो अल्लाह की भी इच्छा है। अल्लाह तआला ने कायनात बनाई,फिर यह दुनिया भी बनाई, फिर इस में इन्सान पैदा किए। फिर अल्लाह तआला ने कहा है कि मैंने यह दुनिया बिना उद्देश्य के नहीं बनाई। इस का एक उद्देश्य भी है ताकि जो नेक लोग हैं, उनको उनकी नेकियों का बदला दे, अमुक से ख़ुश हो, उनको इनाम दे। तो इसलिए अल्लाह तआला ने दुनिया बनाई है। अल्लाह तआला ने कहा है कि मेरी बातें माना करो और नेक काम किया करो। फिर मैं तुम्हें इनाम दिया करूँगा।

शेष पृष्ठ 8 पर

ख़ुत्बः जुमअः

"हमारी जमाअत का पहला फ़र्ज़ यह है कि वह अल्लाह तआला पर सच्चा ईमान हासिल करें।"

असल ईमान तो यह है और तक़्वा की मांग तो यह है कि अल्लाह तआला के साथ किए गए अह्द भी पूरे करो और बारीकी में जा कर पूरे करो और इसी तरह उस की अमानतों के हक़ भी अदा करो और बारीकी में जा कर अदा करो।

तक़्वा हासिल करो क्योंकि तक़्वा के बाद ही ख़ुदा तआला की बरकतें आती हैं।

नेक आदमी हो और सईद फ़ितरत हो, लोगों को फ़ायदा पहुंचाने वाला हो, अपनी भावनाओं को क़ाबू में रखने वाला हो, विनीत हो तो फ़रमाया कि लोग करामत की तरह इस से प्रभावित होंगे। यह भी तब्लीग़ करने का एक माध्यम है

क़ुरआन करीम की स्पष्ट हिदायत है कि मरीज़ हो तो ना रखो। मरीज़ होने के संभावना पर कि मरीज़ बन जाऐंगे रोज़ा छोड़ना यह ग़लत है।

अपनी हालतों और तबीअतों को देखते हुए अपने ज़मीर से फ़तवा लेकर रोज़ा रखने का फ़ैसला करने की नसीहत

रोज़ा रखने की तौफ़ीक़ पाने और महामारी से नजात हासिल करने के लिए दुआएं करने की नसीहत

दुनिया की बिगड़ती हुई आर्थिक अवस्था के परिप्रेक्ष्य में जंग के मंडलाते ख़तरों पर चिन्ता

"अल्लाह तआला हमें दुआओं की तौफ़ीक़ दे। अपनी हालतों को बेहतर करने की तौफ़ीक़ दे और दुनिया को, दुनियावी बड़ी हुकूमतों को अक़्ल से अपनी पालिसियां बनाने और भविष्य के लिए काम करने का तरीका बनाने की तौफ़ीक़ प्रदान फ़रमाए।"

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़,
दिनांक 24 अप्रैल 2020 ई. स्थान - मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद सिर्रे (यू. के)

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيكَ لَهٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ۔
أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ
رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ۔ إِيَّاكَ نَعْبُدُ وَإِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔
اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔ صِرَاطَ الَّذِيْنَ أَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ۔ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ
وَلَا الضَّآلِّيْنَ

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا كُتِبَ عَلَيْكُمُ الصِّيَامُ كَمَا كُتِبَ عَلَى الَّذِيْنَ
مِنْ قَبْلِكُمْ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُوْنَ ﴿۱۸۴﴾ اَيَّامًا مَّعْدُوْدٰتٍ ؕ فَمَنْ كَانَ مِنْكُمْ
مَّرِيْضًا اَوْ عَلٰى سَفَرٍ فَعِدَّةٌ مِّنْ اَيَّامٍ اُخَرَ ؕ وَعَلَى الَّذِيْنَ يُطِيْقُوْنَهٗ فِدْيَةٌ طَعَامُ
مِسْكِيْنٍ ؕ فَمَنْ تَطَوَّعَ خَيْرًا فَهُوَ خَيْرٌ لَّهٗ ؕ وَاَنْ تَصُوْمُوْا خَيْرٌ لَّكُمْ اِنْ كُنْتُمْ
تَعْلَمُوْنَ ﴿۱۸۵﴾ شَهْرُ رَمَضَانَ الَّذِيْٓ اُنْزِلَ فِيْهِ الْقُرْاٰنُ هُدًى لِّلنَّاسِ وَبَيِّنٰتٍ
مِّنَ الْهُدٰى وَالْفُرْقَانِ ۚ فَمَنْ شَهِدَ مِنْكُمُ الشَّهْرَ فَلْيَصُمْهُ ؕ وَمَنْ كَانَ مَرِيْضًا
اَوْ عَلٰى سَفَرٍ فَعِدَّةٌ مِّنْ اَيَّامٍ اُخَرَ ؕ يُرِيْدُ اللّٰهُ بِكُمُ الْيُسْرَ وَلَا يُرِيْدُ بِكُمُ الْعُسْرَ
وَلِتُكْمِلُوا الْعِدَّةَ وَلِتُكَبِّرُوا اللّٰهَ عَلٰى مَا هَدٰىكُمْ وَلَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ

(अलबकर 184 से 186)

इन आयतों का अनुवाद यह है कि हे लोगो जो ईमान लाए हो! तुम पर (भी) रोज़ों का रखना (इसी तरह) फ़र्ज़ किया गया है जिस तरह उन लोगों पर फ़र्ज़ किया गया था जो तुमसे पहले गुज़र चुके हैं ताकि तुम (रुहानी और अख़लाक़ी कमज़ोरियों से) बचो।

फिर अगली आयत का अनुवाद है कि (अत: तुम रोज़े रखो) कुछ गिनती के दिन। और तुम में से जो शख़्स मरीज़ हो या सफ़र में हो तो उसे और दिनों में संख्या पूरी करनी होगी और उन लोगों पर जो इस (अर्थात रोज़ा) की ताक़त न रखते हों (बतौर फ़िद्या) एक मिस्कीन का खाना देना (बशर्त सामर्थ्य) वाजिब है और जो शख़्स पूरे आज्ञापालन से कोई नेक काम करेगा तो यह उस के लिए बेहतर होगा और अगर तुम ज्ञान रखते हो तो (समझ सकते हो कि) तुम्हारा रोज़े रखना तुम्हारे लिए बेहतर है।

रमज़ान का महीना वह (महीना) है जिसके बारे में क़ुरआन (करीम) नाज़िल किया गया है। (वह क़ुरआन) जो समस्त इन्सानों के लिए हिदायत (बना कर भेजा गया) है और जो खुले तर्क अपने अंदर रखता है। ऐसे तर्क जो हिदायत पैदा करते हैं और इस के साथ ही (क़ुरआन में) इलाही निशान भी हैं। इसलिए तुम में से जो शख़्स इस महीना को (इस हाल में)देखे (कि न मरीज़ हो न मुसाफ़िर) हो उसे चाहिए कि वह उस के रोज़े रखे और जो शख़्स मरीज़ हो या सफ़र में हो तो इस पर और दिनों में संख्या (पूरी करनी वाजिब) होगी। अल्लाह तुम्हारे लिए आसानी चाहता है और तुम्हारे लिए तंगी नहीं चाहता और(यह हुक्म उसने इसलिए दिया है कि तुम तंगी में ना पड़ो और) ताकि तुम संख्या को पूरा कर लो और इस (बात) पर अल्लाह की बड़ाई करो कि उसने तुम को हिदायत दी है और ताकि तुम (उस के) शुक्रगुज़ार बनो।

अल्लाह तआला के फ़ज़ल से कल से यहां रमज़ान शुरू हो रहा है। अल्लाह तआला ने रमज़ान के रोज़े हमारी रुहानी तरक़्क़ी के लिए रखे हैं। क़ुरआन करीम की जो पहली आयत मैं ने तिलावत की है इस में यही फ़रमाया कि रोज़े तुम पर इसलिए फ़र्ज़ किए गए हैं ताकि तुम तक़्वा धारण करो और तक़्वा क्या है? इस की वज़ाहत करते हुए एक जगह हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि

"तक़्वा यह है कि इन्सान ख़ुदा की समस्त अमानतों और ईमानी अह्द और ऐसा ही मख़लूक़ की समस्त अमानतों और अह्द को यथा सामर्थ्य ध्यान में रखे अर्थात उनके सूक्ष्म से सूक्ष्मतर पहलूओं पर अपने सामर्थ्य से बढ़ कर पाबन्द हो जाए।"

(ज़मीमा बराहीन अहमदिया हिस्सा 5, रुहानी ख़ज़ाइन भाग 21 पृष्ठ 210)

अर्थात अमानतों और ओहदों के सूक्ष्म से सूक्ष्मतर पहलूओं को सामने रखते हुए फिर उनको अदा करने वाला हो और इस का पाबंद हो जाए। अत: यह कोई आसान काम नहीं है। अल्लाह के अधिकार क्या हैं और बन्दों के अधिकार क्या हैं? इस की सूचि बनाने लगें तो इन्सान परेशान हो जाता है। अल्लाह तआला की इबादत का हक़ है जो हम अदा नहीं कर सकते। अल्लाह तआला के जितने हम पर उपकार हैं इस का हक़ बनता है कि इस की शुक्रगुज़ारी की जाए। यह शुक्रगुज़ारी का हक़ हम अदा नहीं करते और न कर सकते हैं और इस के बिना ही अक्सर लोग तो अल्लाह तआला की नेअमतों से फ़ायदा उठाते चले जाते हैं जैसे कि यह हमारा हक़ है हालाँकि यह अल्लाह तआला का एहसान है जो हमारी हालतों और ना शुक्रगुज़ारी के बावजूद हमें नवाज़ता चला जाता है। हमारे अह्द हैं जो हमने ख़ुदा तआला से किए हैं उनको हम पूरा नहीं करते। मख़लूक़ के अधिकार हैं, माता पिता के अधिकार हैं, पड़ोसी के अधिकार हैं, मुसाफ़िरों के अधिकार हैं, समाज के उमूमी अधिकार हैं जिन्हें हम अदा नहीं करते। जिन्हें हमें अदा करने का हुक्म है और हम उस का हक़ अदा नहीं करते। अत: अगर हम बारीकी से समीक्षा करें तो न हम अल्लाह तआला के हक़ अदा कर रहे हैं और न बंदों के। मैंने एक उमूमी सूचि बनवाई थी जिसमें कुछ मोटे मोटे अधिकार ही रखे थे तो जो बंदों के अधिकार हैं, अल्लाह तआला की मख़लूक़ के अधिकार हैं वह भी लगभग अट्ठाईस उनत्तीस बन गए थे। बहरहाल हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि वास्तिवक ईमान तो यह है और तक़्वा का तक़ाज़ा तो यह है कि अल्लाह तआला के साथ किए गए अह्द भी पूरे करो और बारीकी में जा कर पूरे करो और इसी तरह उस की अमानतों के हक़ भी अदा करो और बारीकी में जा कर अदा करो। इसी तरह मख़लूक़ के अह्द भी बारीकी से अदा करो और इस की अमानतों की भी एक फ़िक्र के साथ अदायगी करो तब

कहा जा सकता है कि तक़्वा है। और अल्लाह तआला फ़रमाता है कि यह रमज़ान का महीना इसलिए आया है, रोज़े रखने की तरफ़ इसलिए तुम्हें ध्यान दिलाया गया है कि साल के ग्यारह महीने में जो सुस्तियां कमियां इन अधिकार के अदा करने में हो गई हैं इस महीने में विशेष रूप से अल्लाह तआला की तरफ़ ध्यान करते हुए, अल्लाह तआला के लिए जायज़ चीज़ों को भी छोड़ते हुए, अल्लाह तआला की लिए भूख प्यास बर्दाश्त करते हुए, अल्लाह तआला की इबादत में पहले से बढ़कर ध्यान देते हुए, बंदों के अधिकार की अदायगी की तरफ़ खासतौर पर ध्यान देते हुए पूरा करो और जब ये करोगे तो इस का नाम तक़्वा है। और यही रमज़ान का और रोज़ों का मक़सद है और जब इन्सान इस नीयत और इस मक़सद की प्राप्ति के लिए रोज़े रखेगा और रमज़ान में से गुज़रेगा और नेक नीयत हो कर गुज़रेगा तो फिर ये तबदीली अस्थायी नहीं होगी बल्कि एक स्थायी तबदीली होगी

फिर अधिकार अल्लाह की अदायगीयों की तरफ़ भी स्थायी ध्यान रहेगी। इबादतों के हक़ अदा करने की तरफ़ भी स्थायी ध्यान रहेगा। दुनिया की व्यस्तता और व्यर्थ बातें ग़लबा नहीं करेंगी और इन्सानों के अधिकार अदा करने की तरफ़ भी उमूमी ध्यान रहेगा। अपने व्यक्तिगत लाभों के लिए हम लोगों के हक़ मारने वाले नहीं होंगे। अगर हम इस नीयत से और इस इरादे से रोज़ों के महीने में दाख़िल नहीं हो रहे तो हमारा रमज़ान में दाख़िल होना बेफ़ाइदा है। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने एक अवसर पर इरशाद फ़रमाया कि जो बंदा अल्लाह तआला के रास्ते में इस का फ़ज़ल चाहते हुए रोज़ा रखता है तो अल्लाह तआला उस के चेहरे और आग के मध्य 70 ख़रीफ़ की दूरी पैदा कर देता है

(सही अलबख़ारी किताबुल जिहाद वालसीर बाब फ़ज़ल अस्सौम फ़ी सबीलिल्लाह हदीस 2840)

अर्थात खुष्की या सर्दी का मौसम है तो जो दूरी एक मौसम और अगले मौसम के मध्य है वह इतनी दूरी है कि सत्तर ख़रीफ़ की दूरी पैदा कर देता है अर्थात एक ख़रीफ़ और दूसरे ख़रीफ़ में एक साल की दूरी है तो इतनी दूरी पैदा कर देता है जो सत्तर सालों के बराबर है। तो ये हैं रोज़े की बरकतें और ये है वह तक़्वा जो रोज़ा पैदा करता है। अर्थात रोज़ा सिर्फ़ तीस दिन के लिए तक़्वा पैदा नहीं करता बल्कि वास्तविक रोज़ा सत्तर साल तक अपना प्रभाव रखता है और इस हिसाब से अगर हम देखें तो रोज़े की फ़र्ज़ीयत होने के बाद एक इन्सान पर, एक बालिग़ मुस्लमान पर जब रोज़ा फ़र्ज़ होता है इस के बाद जो रोज़े से वास्तविक फ़ैज़ उठाने वाला है और इस की रूह को समझ कर रोज़े रखने वाला है वे सारी उम्र के लिए ही इन बरकतों से फ़ैज़ पाता रहेगा जो रोज़े में अल्लाह तआला ने रखी हैं और तक़्वा की राहों को तलाश करता रहेगा जो रोज़े का उद्देश्य है और इस तरह अल्लाह तआला की नाराज़गी से बच जाएगा और इस की प्रसन्नता प्राप्त करने वाला बनता चला जाएगा

अगर हम कल्पना करें कि ऐसे रोज़ेदार हमारे समाज में पैदा हो जाएं तो वे किस क़दर ख़ूबसूरत समाज होगा जहां अल्लाह तआला के हक़ भी अदा किए जा रहे होंगे और बंदों के हक़ भी अदा किए जा रहे होंगे और यही वह हसीन समाज है जो हर मोमिन क़ायम करने की इच्छा रखता है बल्कि हर इन्सान इस समाज को क़ायम रखने की कोशिश करता है। लेकिन जैसा कि मैंने कहा जहां तक उस के अपने अधिकार का सवाल है वह प्राय अपने लिए तो यह पसंद करता है चाहे दूसरे के लिए इस को ख़्याल न आए लेकिन इस्लाम कहता है कि दूसरों के लिए भी तुमने यह समाज स्थापित करना है। सिर्फ अपनी सविधाएं नहीं देखनी, अपने स्वार्थ नहीं देखने, अपने अधिकार नहीं देखने बल्कि दूसरों के अधिकार की भी सुरक्षा करनी है, उनका भी ख़्याल करना है।

आजकल वाइरस की जो महामारी फैली हुई है उसने हुकूमती क़ानून के अधीन अक्सर लोगों को घरों में बंद कर दिया है और इस दृष्टि से यहां एक अच्छी बात जमाअत में भी और कुछ जगहों पर लोगों में भी पैदा हो रही है और उन को ख़्याल आ रहा है। लेकिन दुनिया के हर देश में जमाअत में खासतौर पर इस तरफ़ ध्यान है। ख़ुद्दामुल अहमदिया के अधीन, वालंटेयरज़ के अधीन जहां-जहां लोगों को ख़ुराक पहुंचाने के लिए या दूसरी सुविधाएं पहुंचाने के लिए, दवाईयां पहुंचाने के लिए मदद की ज़रूरत है वह कर रहे हैं। तो यह जो हक़ अदा किए जा रहे हैं यह एक ऐसा नमूना पेश कर रहे हैं जिससे अपने तो लाभ उठा ही रहे हैं ग़ैर भी फ़ायदा उठा कर प्रभावित हो रहे हैं। अत: इन्सानी सेवा के लिए यह सोच जो आजकल पैदा हुई है यह सोच भी हमेशा हमारे अंदर क़ायम रहने वाली होनी चाहिए न कि सिर्फ हंगामी हालात के लिए।

बहरहाल इस के अतिरिक्त रुहानी लाभ क्या हैं? लोग लिखते हैं कि इस वजह से हमारे घर का एक नया माहौल बन गया है कि हम घरों में बैठ गए हैं। नमाज़ें बाजमाअत अदा होती हैं। नमाज़ों के बाद संक्षिप्त दर्स भी होता है। ख़ुत्बा इकट्ठे बैठ कर सुनते हैं और कुछ दूसरे प्रोग्राम एम टी ए पर देखते हैं। अगर यह लॉक डाउन और अधिक लंबा होता है , अगर यह पूरे रमज़ान तक हावी रहता है तो फिर इस रमज़ान में इस तरह बाजमाअत नमाज़ें और दरस को और अधिक ध्यान से अदा करने की हमें कोशिश करनी चाहिए। बच्चों को छोटे छोटे मसाइल भी सिखाएँ और बताएं। जैसा कि पहले भी मैंने एक ख़ुत्बे में कहा था कि इस तरह अपना इल्म भी बढ़ाएं और बच्चों का इलम भी बढ़ाएं और दुआओं की तरफ़ ध्यान देकर खासतौर पर अल्लाह तआला से अपने लिए भी और दुनिया के लिए भी रहम मांगें। अत: यह दिन जो अल्लाह तआला हमें दे रहा है इस का भरपूर फ़ायदा उठाना चाहिए। इस महामारी ने प्राय घरों में जो माहौल पैदा कर दिया है जैसा कि मैं ने कहा इस में और अधिक बेहतरी की तरफ़ हमें ध्यान देनी चाहिए न कि इन दुनिया-दार घरों की तरह हो जाएं जिन घरों के बारे में प्राय आता है कि घरों में लड़ाईयां और फ़साद बढ़ गए हैं और बेचेनियां बढ़ गई हैं। एक नेक माहौल में तो इस नेकी की वजह से जिसके करने की तरफ़ हमें ध्यान दिलाई गई है हमारे माहौल बेहतर होने चाहिऐं। कई बार मर्द इस माहौल का मुकम्मल हिस्सा नहीं बनते जो एक दीनी माहौल घरों में पैदा हो रहा है और कई बार औरतें अपनी प्राथमिकताएं विभिन्न रखती हैं। ऐसे लोगों को यह समझ ही नहीं है कि ऐसे हालात मैं किस क़दर अल्लाह तआला की तरफ़ झुकने और इस की रज़ा प्राप्त करने की ज़रूरत है और यही वह वक़्त है जब बच्चों को भी ज़्यादा से ज़्यादा ख़ुदा तआला के क़रीब लाया जा सकता है। अत: इन दिनों में हमारे हर घर को, हमारे हर अहमदी घर को इन दिनों में इस तरफ़ बहुत ध्यान करने की ज़रूरत है ताकि हम ज़्यादा से ज़्यादा ख़ुदा तआला का प्यार जज़ब कर सकें और अंजाम बख़ैर हो। अल्लाह तआला हमें तक़्वा की हक़ीक़त को समझने की और इस पर चलने होने की तौफ़ीक़ प्रदान फ़रमाए।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने विभिन्न अंदाज़ में विभिन्न अवसरों पर तक़्वा को स्पष्ट किया है। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम इस ज़माना का हिस्न हसीन (मज़बूत क़िला) हैं। वह मज़बूत सुरक्षा स्थल और क़िला हैं जिन्होंने अल्लाह तआला से रहनुमाई प्राप्त कर के इस्लाम की वास्तविक शिक्षा हम पर स्पष्ट कर के बड़े दर्द से हमें अल्लाह तआला और इस के रसूल के बताए हुए रास्ते दिखा कर इस सुरक्षा स्थल में दाख़िल होने की तरफ़ ध्यान दिलाया है। अत: हमारा फ़र्ज़ बनता है कि हम जो इस बात का अह्द कर के आप की जमाअत में शामिल हुए हैं कि आप की बातों को सुनकर इस पर अनुकरण करेंगे, इस अह्द को पूरा करें जो हमने आप से किया है। आप के दर्द से भरे शब्दों पर ग़ौर कर के उन पर अनुकरण करें और जहां हम ओहदों को पूरा करने वाले बनें वहां अपनी दुनिया तथा परलोक भी संवारने वाले बन जाएं। इस वक़्त में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के कुछ उद्धरण प्रस्तुत करूँगा जिन को विभिन्न मज्लिसों में आप ने जमाअत के लोगों के सामने हमारी रुहानी तरक़्क़ी और तक़्वा में तरक़्क़ी के लिए वर्णन फ़रमाया। एक मज्लिस में इस बात को स्पष्टता से वर्णन फ़रमाते हुए कि तक़्वा किया है और कैसे प्राप्त हो सकता है हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं

"ज़रूरी बात यह है कि पहले यह समझ ले कि तक़्वा क्या चीज़ है और कैसे प्राप्त होता है। तक़्वा तो यह है कि सूक्ष्म से सूक्ष्मतर गन्दगी से बचे और इस को प्राप्त करने का यह तरीक़ा है कि इन्सान ऐसी भरपूर कोशिश करे कि गुनाह के किनारा तक न पहुंचे और फिर केवल कोशिश ही को काफ़ी न समझे बल्कि ऐसी दुआ करे जो इस का हक़ है कि नर्म हो जाए। बैठ कर, सिज्दा में,रुकू में, क़ियाम में और तहज्जुद में अत: हर हालत और हर वक़त इसी फ़िक्र तथा दुआ में लगा रहे कि अल्लाह तआला गुनाह और कमज़ोरियों की बुराई से नजात बख़्शे।" फ़रमाया कि "इस से बढ़कर कोई नेअमत नहीं है कि इन्सान गुनाह और पाप से महफ़ूज़ और मासूम हो जाए और ख़ुदा तआला की नज़र में सच्चा और सादिक़ ठहर जाए।" फ़रमाया "लेकिन यह नेअमत न तो केवल कोशिश से प्राप्त होती है और न केवल दुआ से।" न कोशिश काफ़ी है। न केवल दुआ काफ़ी है। "बल्कि यह दुआ और कोशिश दोनों के सम्पूर्ण मिलाप से प्राप्त हो सकती है।" जब तक दोनों चीज़ों की चरम नहीं करोगे यह चीज़ नहीं मिल सकती। फ़रमाया कि "जो व्यक्ति केवल दुआ ही करता है और कोशिश नहीं करता वह व्यक्ति गुनाह करता है और ख़ुदा तआला को आज़माता है। ऐसा ही जो केवल चेष्टा करता है और दुआ नहीं करता वह भी शोख़ी करता और ख़ुदा तआला से इस्तिग़ना (आवश्यकता) ज़ाहिर कर के अपनी परामर्श और चेष्टा और ताकत से नेकी प्राप्त करना चाहता है।" अपनी ताकत से

नेकियां नहीं प्राप्त हो सकतीं। फिर फ़रमाया "लेकिन मोमिन और सच्चे मोमिन "और सच्चे मुस्लमान की यह आदत नहीं। वह कोशिश और दुआ दोनों से काम लेता है। पूरी चेष्टा करता है।" जो ज़ाहिरी माध्यम हैं उनको पूरा करता है "और फिर मामला ख़ुदा तआला पर छोड़कर दुआ करता है और यही शिक्षा क़ुरआन शरीफ़ की पहली ही सूरत में दी गई है अत: फ़रमाया है।اِيَّاكَ نَعۡبُدُ وَاِيَّاكَ نَسۡتَعِيۡنُ जो शख़्स अपनी शक्तियों से काम नहीं लेता वह न केवल अपनी शक्तियों को नष्ट करता और उनका अपमान करता है बल्कि वह गुनाह करता है।"

(मल्फ़ूज़ात भाग 6 पृष्ठ 337-338 प्रकाशन 1984 ई)

फिर इस को और अधिक विस्तार से इस तरह वर्णन फ़रमाया कि

"जो कुछ शक्तियां ख़ुदा तआला ने इन्सान को प्रदान की हैं उनसे पूरा काम लेकर फिर वह अंजाम को ख़ुदा के सपुर्द करता है और ख़ुदा तआला से निवेदन करता है कि जहां तक तूने मुझे शक्ति प्रदान की थी इस सीमा तक तो मैंने इस से काम ले लिया। यह اِيَّاكَ نَعۡبُدُ के अर्थ हैं। और फिर اِيَّاكَ نَسۡتَعِيۡنُ कह कर ख़ुदा से सहायता चाहता है कि बाक़ी स्तरों के लिए मैं तुझ से सहायता मांगता हूँ।"

(मल्फ़ूज़ात भाग 6 पृष्ठ 338-339 हाशिया प्रकाशन 1984 ई)

लेकिन हमें हमेशा यह याद रखना चाहिए कि ख़ुदा तआला हमारे दिलों के हाल और हमारे हर कर्म से परिचित है इसलिए अपनी कोशिश को इंतिहा तक पहुंचा कर जिस सीमा तक तौफ़ीक़ है इस सीमा तक कोशिश कर के फिर उस की मदद का भी अभिलाषी हुआ जा सकता है। अत: इस मामला में भी अपने नफ़्स को अच्छी तरह टटोलने की ज़रूरत है। यह देखने की ज़रूरत है कि क्या तक़्वा से हम काम ले रहे हैं कि नहीं। फिर आप ने फ़रमाया

"इस में शक नहीं है कि इन्सान कई बाक चेष्टा से फ़ायदा उठाता है लेकिन चेष्टा पर सारा भरोसा करना सख़्त नादानी और जहालत है। जब तक चेष्टा के साथ दुआ न हो कुछ नहीं और दुआ के साथ चेष्टा न हो तो कुछ लाभ नहीं। जिस खिड़की की राह से पाप आता है पहले ज़रूरी है कि इस खिड़की को बंद किया जाए।" फिर जिस सुराख़ से या जिस जगह से गुनाह अंदर आता है जो चीज़ गुनाह की, ना-फ़रमानी की, धर्म से दूर हटने का कारण बनती है पहले ज़रूरी है कि इस कारण को दूर किया जाए। फ़रमाया कि इस खिड़की को बंद किया जाए। "फिर नफ़्स की आसानी के लिए दुआ करता रहे। इसी के लिए कहा है

وَالَّذِيۡنَ جَاهَدُوۡا فِيۡنَا لَنَهۡدِيَنَّهُمۡ سُبُلَنَا (अल-अनकबूत 70)

फ़रमाया कि "'इस में कितनी हिदायत तदबीरों को व्यवहार में लाने के लिए की गई है। कोशिशों में ख़ुदा को न छोड़े। दूसरी तरफ़ फ़रमाता है اُدۡعُوۡنِيۡۤ اَسۡتَجِبۡ لَكُمۡ (अल-मोमिन 61) अत: अगर इन्सान पूरे तक़्वे का इच्छुक है तो चेष्टा करे और दुआ करे। दोनों को जो करने का हक़ है करे। तो इसी हालत में ख़ुदा इस पर रहम करेगा लेकिन अगर एक करेगा और दूसरी को छोड़ेगा तो वंचित रहेगा।

(मल्फ़ूज़ात भाग 6 पृष्ठ 338-339 प्रकाशन 1984 ई)

फिर इस को और अधिक खोलते हुए हज़रत अक़्दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि

"अत: इन्सान ऐसे तरीक़ा से तक़्वा पर क़ायम होता है।" अर्थात चेष्टा और दुआ से । फिर फ़रमाया "और अल्लाह का तक़्वा प्रत्येक कर्म की जड़ है।" फ़रमाया कि इन्सान ऐसे तरीक़ से तक़्वा पर क़ायम होता है। वह कौन सा तरीक़ा है? जो पहले वर्णन हुआ है अर्थात चेष्टा भी और दुआ भी। ऐसे तरीका से तक़्वा पर क़ायम होता है और अल्लाह का तक़्वा प्रत्येक कर्म की जड़ है। "जो इस से ख़ाली है वह दुराचारी है। तक़्वा से कर्मों की सुन्दरता पैदा होती है।" तक़्वा ही है जो कर्मों की ख़ूबसूरती पैदा करता है। "और इस के माध्यम से अल्लाह तआला का क़ुरब मिलता है और इसी के माध्यम वह अल्लाह तआला का वली बन जाता है। अत: फ़रमाया है

اِنۡ اَوۡلِيَآؤُهٗۤ اِلَّا الۡمُتَّقُوۡنَ (अल-अनफ़ाल 35)

फिर اِنۡ اَوۡلِيَآؤُهٗۤ اِلَّا الۡمُتَّقُوۡنَ की वज़ाहत और अधिक इस तरह फ़रमाई कि

"वलाएत का हिस्सा तक़्वा ही पर है। ख़ुदा तआला से भयभीत और डरते हुए हो कर अगर उसे प्राप्त करोगे तो कमाल तक पहुंच जाओगे।

(मल्फ़ूज़ात भाग 6 पृष्ठ 340 हाशिया सहित)

अल्लाह के औलिया बनना है तो वह तक़्वा से मिलता है और अगर अल्लाह तआला का ख़ौफ़ दिल में रहेगा ,इस से डरते रहोगे तो फिर इन्सान इस कमाल तक पहुंच सकता है। फिर हज़रत अक़्दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं

"कामिल तौर पर जब तक़्वा का कोई स्तर बाक़ी न रहे तो फिर यह औलिया अल्लाह में दाख़िल हो जाता है और तक़्वा हक़ीक़त में अपने कामिल दर्जा पर एक मौत है क्योंकि जब नफ़्स की सारे पहलूओं से विरोध करेगा तो नफ़्स मर जाएगा। इसी लिए कहा गया है कि مُوۡتُوۡا قَبۡلَ اَنۡ تَمُوۡتُوۡا

फ़रमाया कि "नफ़्स ज़ाहिरी आन्नदों को पसन्द करता है , भीतरी अन्नदों से यह बिलकुल बे-ख़बर है।" अर्थात अल्लाह तआला के जो आन्नद हैं जो रुहानी आन्नद हैं वह तो छिपे हुए आन्नद हैं उनको तो जानता ही नहीं। ज़ाहिरी दुनिया की चकाचौंध है उन्हीं को इन्सान जानता है और नफ़्स उन्हीं को चाहता है। नफ़्स को ख़बरदार करने के लिए फ़रमाया कि "उसे ख़बरदार करने के लिए ज़रूरी है कि अव्वल ज़ाहिरी आन्नदों पर एक मौत वारिद हो और फिर नफ़्स को भीतरी आन्नदों का ज्ञान हो।" ज़ाहरी आन्नद जो हैं उन पर मौत वारिद हो तो फिर नफ़्स को भीतरी लज़्ज़ात का इलम होगा। फ़रमाया कि "उस वक़्त इलाही आन्नद जो कि जन्नती ज़िंदगी का नमूना है शुरू होगी।" जब छुपी हुई लज़्ज़ात का इलम होना शुरू होगा तो जन्नती ज़िन्दगी का नमूना शुरू होगा। फिर आप ने इसी हवाले से जमाअत को नसीहत करते हुए फ़रमाया कि अत: "हमारी जमाअत को चाहिए कि नफ़्स पर मौत वारिद करने" यह कोई बड़े अल्लाह के औलिया और बहुत उच्च स्तर के पहुंचे हुए लोगों को नसीहत नहीं है बल्कि जमाअत के सामान्य लोगों को आप की नसीहत है। यह न समझे कि इस स्थान पर पहुंचने के लिए, अल्लाह तआला के लिए एक ख़ास स्थान चाहिए और हर नफ़्स नहीं पहुंचता। आप ने जमाअत को प्राय नसीहत फ़रमाई है। फ़रमाया अत: "हमारी जमाअत को चाहिए कि नफ़्स पर मौत वारिद करने और तक़्वा को प्राप्त करने के लिए वह अव्वल चेष्ठा करें जैसे बच्चे सुन्दर लिखाई के लिए सीखते हैं तो प्रथम प्रथम टेढ़े अक्षर लिखते हैं लेकिन अन्त में चेष्टा करते करते ख़ुद ही साफ़ और सीधे अक्षर लिखने लग जाते हैं। इसी तरह उनको भी कोशिश करनी चाहिए। जब अल्लाह तआला उनकी मेहनत को देखेगा तो ख़ुद उन पर रहम करेगा और यह जो पहले वर्णन हुआ था وَالَّذِيۡنَ جَاهَدُوۡا فِيۡنَا उस को और अधिक स्पष्ट फ़रमाते हैं कि "وَالَّذِيۡنَ جَاهَدُوۡا فِيۡنَا में चेष्ठा से अभिप्राय यही कोशिश है।" मेहनत करे इन्सान और अल्लाह तआला से दुआ मांगे तो अल्लाह तआला रहम करता है और इस को फल लगाता है। फ़रमाया कि इस में कोशिश से अभिप्राय यही कोशशि है जिस तरह एक बच्चा कोशिश करता है " कि एक तरफ़ दुआ करता है दूसरी तरफ़ कामिल चेष्टा करे आख़िर अल्लाह तआला का फ़ज़ल आ जाता है और नफ़्स का जोश दब जाता है और ठंडा हो जाता है और ऐसी हालत हो जाती है जैसे आग पर पानी डाल दिया जाए। बहुत से इन्सान हैं जो नफ़्स अम्मारा ही में पड़े रहते हैं।"

फिर जमाअत के भीतरी सुधार के लिए आप फ़रमाते हैं कि "मैं देखता हूँ कि जमाअत में आपस में झगड़े भी हो जाते हैं।" आपस में झगड़े हैं। नाराज़गियां हैं। दूरियाँ हैं वे हो जाती हैं" और साधारण झगड़ों से फिर एक दूसरे की इज़्ज़त पर हमला करने लगता है और अपने भाई से लड़ता है। यह बहुत ही अनुचित हरकत है। यह नहीं होना चाहिए बल्कि एक अगर ग़लती का एतराफ़ कर ले तो क्या हर्ज है?" फ़रमाया कि "कुछ आदमी थोड़ी थोड़ी सी बात पर दूसरे के अपमान का इक़रार किए बिना पीछा नहीं छोड़ते। इन बातों से परहेज़ करना अनिवार्य है। ख़ुदा तआला का नाम सत्तार है। फिर यह क्यों अपने भाई पर रहम नहीं करता और क्षमा और बुराई झुपाने से काम नहीं लेता। चाहिए कि अपने भाई की पर्दापोशी करे और इस के मान तथा सम्मान पर हमला न करे।"

फिर फ़रमाया कि "अभी तक बहुत से आदमी जमाअत में ऐसे हैं कि थोड़ी सी बात भी नफ़्स के विरुद्ध सुन लेते हैं तो उनको जोश आ जाता है हालाँकि ऐसे समस्त जोशों को दूर करना बहुत ज़रूरी है।" उनको ख़त्म करना बहुत ज़रूरी है "ताकि दया और बुर्दबारी तबीयत में पैदा हो।" फ़रमाया "देखा जाता है कि जब एक तुच्छ सी बात पर बेहस शुरू होती है तो एक दूसरे को पराजित करने की फ़िक्र में होता है कि " किस तरह में दूसरे को नीचा दिखाऊँ" किसी तरह मैं विजयी हो जाऊं। ऐसे अवसर पर नफ़्स के जोश से बचना चाहिए और फ़साद को दूर करने के लिए छोटी छोटी बातों में जान बूझ कर ख़ुद अपमान धारण कर लेना चाहिए। इस बात की कोशिश हरगिज़ न करनी चाहिए कि मुक़ाबला में अपने दूसरे भाई को अपमानित किया जाए।" (मल्फ़ूज़ात भाग 6 पृष्ठ 341 से 342)

फ़रमाया कि "यह बड़े गर्व की जड़ और बीमारी है कि दूसरे की भूल पकड़ कर इश्तिहार दे दिया जाए।" फ़रमाया कि "अपने भाई पर विजय पाने का ख़्याल गर्व की एक जड़ है।" गर्व की जड़ पहले वर्णन फ़रमाई थी कि दूसरे की भूल पकड़ कर इश्तिहार दे दिया जाए, और अधिक वज़ाहत फ़रमाई कि "अपने भाई पर फ़तह पाने का विचार भी गर्व की एक जड़ है और बड़ी भारी बीमारी है कि वह अपने एक

भाई की बुराई को प्रचारित करने की तरग़ीब दिलाती है।" फ़रमाया "ऐसे मामलों से नफ़्स ख़राब हो जाता है । इस से परहेज़ करना चाहिए। अत: ये सब बातों तक़्वा में दाख़िल हैं और अंदरूनी बैरूनी मामलों में तक़्वा से काम लेने वाला फ़रिश्तों में दाख़िल किया जाता है क्योंकि इस में कोई सरकशी बाक़ी नहीं रह जाती। तक़्वा प्राप्त करो क्योंकि तक़्वा के बाद ही ख़ुदा तआला की बरकतें आती हैं। मुत्तक़ी दुनिया की बलाओं से बचाया जाता है। ख़ुदा उनका पर्दापोश हो जाता है। जब तक यह तरीक़ धारण न किया जाए कुछ फ़ायदा नहीं। ऐसे लोग मेरी बैअत से कोई फ़ायदा नहीं उठा सकते।"

फ़रमाया कि "याद रखो बैअत का ज़बानी इक़रार कुछ चीज़ नहीं है अल्लाह तआला नफ़्स की पवित्रता चाहता है।" फ़रमाया कि फ़ायदा तो कोई नहीं होगा। "फ़ायदा हो भी तो किस तरह जबकि एक ज़ुल्म तो अंदर ही रहा। अगर वही जोश, गर्व, अंहकार, अजब, दिखावा, शीघ्र क्रोधित होना बाक़ी है जो दूसरों में भी है तो फिर अन्तर ही क्या है?"

इस की और अधिक स्पष्ट करते हुए इस तरह वर्णन फरमाते हैं

"इसलिए अपने नफ़्सों में तबदीली करो और अख़लाक़ का उच्च नमूना प्राप्त करो।" फ़रमाया कि "नेक अगर एक ही हो और वह सारे गांव में एक ही हो तो लोग करामत की तरह इस से प्रभावित होंगे नेक आदमी हो और सईद फ़ितरत हो, लोगों को लाभ पहुंचाने वाला हो, अपनी भावनाओं को क़ाबू में रखने वाला हो, विनीत हो तो फ़रमाया कि लोग करामत की तरह इस से प्रभावित होंगे। यह भी तब्लीग़ करने का एक माध्यम है। फ़रमाया "नेक इन्सान जो अल्लाह तआला से डर कर नेकी धारण करता है इस में एक रब्बानी रोब होता है और दिलों में पड़ जाता है कि यह ख़ुदा वाला है।" फ़रमाया कि "चाहे कैसी ही दुश्मनी हो धीरे धीरे सब ख़ुद अपने आप उस के अधीन हो जाएंगे और बजाय तुच्छता के इस की महानता करने लग जाएंगे फ़रमाया कि "यह बिलकुल सच्ची बात है कि जो ख़ुदा तआला की तरफ़ से आता है ख़ुदा तआला अपनी महानता से इस को हिस्सा देता है और यही तरीक़ नेक किस्मती का है। अत: याद रखो कि छोटी छोटी बातों में भाईयों को दुख देना ठीक नहीं है। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम समस्त आचरण के अधिकारी हैं और इस वक़्त ख़ुदा तआला ने आख़िरी नमूना आप के आचरण का क़ायम किया है।" फ़रमाया कि "इस वक़्त भी अगर वही दरिंदगी रही तो फिर सख़्त अफ़सोस और कम-नसीबी है। अत: दूसरों पर आरोप न लगाओ क्योंकि कई बार इन्सान दूसरे पर आरपो लगा कर ख़ुद इस में गिरफ़्तार हो जाता है। अगर वह आरोप इस में नहीं।" अगर वह आरोप इस में नहीं है और फिर तुम ने इल्ज़ाम लगाया है तो ख़ुद इस में गिरफ़्तार हो जाओगे। 'लेकिन अगर वह आरोप सचमुच इस में है।" जिस पर तुम इल्ज़ाम लगा रहे हो, जिसके बारे में कह रहे हो कि इस में यह आरोप है तो फ़रमाया अगर सचमुच इस में है। "तो इस का मामला फिर ख़ुदा तआला से है।" फिर भी तुम्हें आरोप लगाने की कोई ज़रूरत नहीं। अगर बुराई है तो इस का मामला ख़ुदा के साथ है और अगर नहीं है और तुम कह रहे हो तो फिर वह तुम्हारे ऊपर पड़ सकता है। फिर फ़रमाया "बहुत से आदमियों की आदत होती है कि वे अपने भाईयों पर शीघ्र नापाक आरोप लगा देते हैं इन बातों से परहेज़ करो। मानव जाति को लाभ पहुँचाओ और... अपनी बीवियों से उत्तम व्यवहार करो। पड़ोसियों से नेक सुलूक करो। और अपने भाईयों से नेक व्यवहार करो और सबसे पहले शिर्क से बचो कि यह तक़्वा की आरम्भिक ईंट है।"

(उद्धरित मल्फ़ूज़ात भाग 6 पृष्ठ 340 से 344 हाशिया के साथ प्रकाशन 1984 ई)

फिर आप फ़रमाते हैं "तक़्वा के अर्थ हैं बुराई की बारीक राहों से परहेज़ करना। मगर याद रखो नेकी इतनी नहीं है कि एक शख़्स कहे कि मैं नेक हूँ इसलिए कि मैं ने किसी का माल नहीं लिया, डाका नहीं मारा, चोरी नहीं करता, बुरी नज़र और व्यभिचार नहीं करता। ऐसी नेकी आरिफ़ के नज़दीक हंसी के योग्य है क्योंकि अगर वे इन बदियों को करे और चोरी या डाका मारे तो वह सज़ा पाएगा। अत: यह कोई नेकी नहीं कि जो आरिफ़ की दृष्टि में सम्मान को योग्य हो बल्कि असली और हक़ीक़ी नेकी यह है कि मानव जाति की सेवा करे और अल्लाह तआला की राह में पूर्ण सच्चाई और वफ़ादारी दिखलाए और इस की राह में जान तक दे देने को तैयार हो। इसी लिए यहां फ़रमाया है

إِنَّ اللّٰهَ مَعَ الَّذِيْنَ اتَّقَوْا وَّالَّذِيْنَ هُمْ مُّحْسِنُوْنَ (अन्नहल 129)

अर्थात अल्लाह तआला उनके साथ है जो बदी से परहेज़ करते हैं और साथ ही नेकियां भी करते हैं। यह ख़ूब याद रखो कि केवल बुराई से परहेज़ करना कोई ख़ूबी की बात नहीं जब तक उस के साथ नेकियां न करे।"

(मल्फ़ूज़ात भाग 6 पृष्ठ 241-242 प्रकाशन 1984 ई)

फिर आप फ़रमाते हैं " यक़ीनन समझो कि हर एक पाकबाज़ी और नेकी की असली जड़ ख़ुदा तआला पर ईमान लाना है। जिस क़दर इसान का अल्लाह तआला पर ईमान कमज़ोर होता है उसी क़दर नेक कर्मों में कमज़ोरी और सुस्ती पाई जाती है। लेकिन जब ईमान सुदृढ़ हो।" अल्लाह तआला पर ईमान मज़बूत होगा तो कर्म भी अच्छे होंगे। "जब ईमान सुदृढ़ हो और अल्लाह तआला को इस के समस्त गुणों के साथ यक़ीन कर लिया जाए उसी क़दर अजीब रंग की तबदीली इन्सान के कर्मों में पैदा हो जाती है।" अल्लाह तआला के गुणों पर पूर्ण विश्वास पैदा हो जाए तो एक अजीब रंग की तबदीली इन्सान के कर्मों में पैदा हो जाती है।" ख़ुदा तआला पर ईमान रखने वाला गुनाह पर क़ादिर नहीं हो सकता क्योंकि यह ईमान उस की नफ़्सानी कुव्वतों और गुनाह के अंगों को काट देता है।" फ़रमाया कि "देखो अगर किसी की आँखें निकाल दी जाएं तो वह आँखों से बदनज़री कैसे कर सकता है और आँखों का गुनाह कैसे करेगा ? और अगर ऐसा ही हाथ काट दिए जाएं फिर वह गुनाह जो इन अंगों से सम्बन्धित हैं कैसे कर सकता है।" फ़रमाते हैं कि "ठीक इसी तरह पर जब एक इन्सान नफ़्स मुतमइन्ना की अवस्था में होता है तो नफ़्स मुतमइन्ना उसे अंधा कर देता है और इस की आँखों में गुनाह की क़ुव्वत नहीं रहती। वह देखता है पर नहीं देखता क्योंकि आँखों के गुनाह" अर्थात देखता तो है मगर बदनज़री की नज़र से नहीं देखता। गुनाह की नज़र से "नहीं देखता क्योंकि आँखों के गुनाह की नज़र छीन ले जाती है। वह कान रखता है मगर बहरा होता है।" सुनता है लेकिन ग़लत बातें नहीं सुनता। "और वे बातें जो गुनाह की हैं नहीं सुन सकता। इसी तरह पर इस की समस्त नफ़्सानी और शहवानी क़ुव्वतें और भीतरी अंग काट दिए जाते हैं। इस की सारी ताक़तों पर जिनसे गुनाह हो सकता था एक मौत हो जाती है और वह बिलकुल एक लाश की तरह होता है और ख़ुदा तआला ही की इच्छा के अधीन होता है वह उस के सिवा एक क़दम नहीं उठा सकता। यह वह हालत होती है जब ख़ुदा तआला पर सच्चा ईमान हो और जिसका नतीजा यह होता है कि पूर्ण सन्तोष उसे दिया जाता है।" आप फ़रमाते हैं कि "यही वह स्थान है जो इन्सान का वास्तविक लक्ष्य होना चाहिए।" फिर इस बारे में कि जो इन्सान का वास्तविक लक्ष्य होना चाहिए फिर आगे जमाअत को फ़रमाया "और हमारी जमाअत को इस की ज़रूरत है और सम्पूर्ण सन्तोष के प्राप्त करने के लिए सम्पूर्ण ईमान की ज़रूरत है। अत: हमारी जमाअत का" फ़रमाते हैं कि " हमारी जमाअत का पहला फ़र्ज़ यह है कि वह अल्लाह तआला पर सच्चा ईमान प्राप्त करें।"

(मल्फ़ूज़ात भाग 6 पृष्ठ 244-245)

फिर फ़रमाते हैं आप "कोई पवित्र नहीं बन सकता जब तक ख़ुदा तआला न बनाए। जब ख़ुदा तआला के दरवाज़ा पर विनय और विनम्रता से इस की रूह गिरेगी तो ख़ुदा तआला उस की दुआ स्वीकार करेगा और वह मुत्तक़ी बनेगा और इस वक़्त वह इस योग्य हो सकेगा कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के धर्म को समझ सके। उस के बिना जो कुछ वह धर्म धर्म कर के पुकारता है और इबादत इत्यादि करता है वह एक रस्मी बात और विचार हैं कि पूर्वजों के अनुसरण से सुन सुना कर करते हैं। बाप दादा कर रहे थे तो मैं भी कर रहा हूँ "कोई हक़ीक़त और रूहानियत उस के अंदर नहीं होती।"

(मल्फ़ूज़ात भाग 6 पृष्ठ 228 प्रकाशन 1984 ई)

अत: ये हैं वे तक्वा के स्तर और यह है वह धर्म को जानने ,समझने और अमल करने का स्तर जिसे प्राप्त करने की तरफ़ हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने हमें ध्यान दिलाया और जिसकी हमें कोशिश करनी चाहिए और अपने कर्मों के साथ अल्लाह तआला के हुज़ूर विनम्रता से झुक कर उस की मदद मांगनी चाहिए कि ख़ुदा तआला हमें इन स्तरों को प्राप्त करने और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सालम की आशाओं पर पूरा उतरने की तौफ़ीक़ प्रदान फ़रमाए और यही तक़्वा है जो फिर अगली आयात में रोज़े की इस की छूट की जो विस्तार वर्णन की गई हैं उस के सही प्रयोग करने की भी तौफ़ीक़ देता है। यह हर इन्सान की अपनी हालत पर अल्लाह तआला ने छोड़ा है शर्त यह है कि तक़्वा से काम लिया जाए। अगर रोज़े रखने की ताक़त नहीं, ऐसी बीमारी है जिसमें रोज़ा बर्दाश्त करना मुश्किल है, ऐसी बीमारी है जिसमें डाक्टर ने कहा है कि रोज़ा नहीं रखना तो फिर फ़िद्या दे दो लेकिन बहाने तलाश कर के फ़िद्या का जवाज़ पैदा न करो बल्कि फ़रमाया कि नेक काम के लिए आज्ञापालन ज़रूरी है। यह देखना है कि अल्लाह तआला ने किस तरह इस काम को करने का हुक्म दिया है। अत: अगर गहराई में जा कर, तक़्वा पर चलते हुए कोई अपना जायज़ा ले तो पता चलता है कि रोज़ा रखना बेहतर है या अस्थायी तौर पर फ़िद्या देना है। अल्लाह तआला ने फिर आगे और अधिक स्पष्टता से फ़र्मा दिया कि

मरीज़ हो या सफ़र पर हो तो रोज़ा न रखो क्योंकि अल्लाह तआला तंगी नहीं चाहता और जब बीमारी दूर हो जाए तो फिर छोड़े हुए रोज़े पूरे करो। सफ़र के दौरान जो रोज़े छूट गए उन्हें पूरा करो चाहे फ़िद्या दे भी दिया हो। अत: घूम फिर कर बात वहीं आ जाती है कि तक़्वा से काम लेते हुए अल्लाह तआला का ख़ौफ़ और इस बात को सामने रखते हुए कि वह हमारी हालतों को जानता है अपने फ़ैसले करो तो अल्लाह तआला तुम्हारे लिए बेहतर अवस्था पैदा करेगा, बेहतर परिणाम पैदा करेगा।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सालम फ़रमाते हैं वह शख़्स जिसका दिल इस बात से ख़ुश है कि रमज़ान आ गया और मैं इस की प्रतीक्षा कर रहा था कि आए और रोज़ा रखूं और वह बीमारी के कारण से रोज़ा नहीं रख सका तो वह आसमान पर रोज़े से वंचित नहीं है। फ़रमाया इस दुनिया में बहुत लोग बहाना तलाश करते हैं, बहाने करते हैं और वे ख़्याल करते हैं कि हम जिस तरह दुनिया वालों को धोखा दे लेते हैं वैसे ही ख़ुदा को फ़रेब देते हैं। दुनिया वालों को धोखा दे लिया तो अल्लाह को भी दिया जा सकता है। बहाना तलाश करने वाले अपने वजूद से आप मसला तराश करते हैं। ख़ुद ही मसला बना लिया और आशंकाएं शामिल कर के उनको सही गिनते हैं। बीच में आशंकाएं शामिल कर ली यह हो गया वह हो गया और समझते हैं कि रोज़ा छोड़ने की सही वजह बयान हो गई। फ़रमाया लेकिन ख़ुदा तआला के निकट वह सही नहीं। फ़रमाया कि आशंकाओं का अध्याय बहुत व्यापक है। बहाने बनाने हैं या उज्र निकालने हैं तो एक से दूसरा बहाना निकलता चला जाता है। फ़रमाते हैं अगर इन्सान चाहे कि अन्हीं आशंकाओं को बुनियाद बनाना है तो फिर अगर इन्सान चाहे तो सारी उम्र बैठ कर नमाज़ पढ़ता रहे और रमज़ान के रोज़े बिलकुल न रखे। फ़रमाते हैं कि मगर ख़ुदा उस की नीयत और इरादे को जानता है। अल्लाह तआला ग़ैब को जानने वाला है। हमारी पाताल तक को जानता है। वह हमारी नीयतों को भी जानता है। हमारे इरादों को भी जानता है। फ़रमाया जो सच्चाई और इख़लास रखता है इस के साथ तो अल्लाह तआला सच्चाई और इख़लास दिखाने वाले का सुलूक करता है लेकिन जो बहाना तलाश करता है इस से फिर उस के अनुसार सुलूक होता है क्योंकि अल्लाह तआला जानता है। फिर आप फ़रमाते हैं कि ख़ुदा तआला जानता है जो सच्चाई और इख़लास रखता है। ख़ुदा तआला जानता है कि इस के दिल में दर्द है और ख़ुदा तआला उसे सवाब भी ज़्यादा देता है क्योंकि दर्दे दिल एक सम्मान के योग्य चीज़ है। जो बहाना तलाश करने वाला है इस के दिल में दर्द कोई नहीं। बहाना ढूंढने वाले इन्सान तावीलों पर भरोसा करते है लेकिन ख़ुदा तआला के निकट यह भरोसा कोई चीज़ नहीं (उद्धरित मल्फ़ूज़ात भाग 6 पृष्ठ 259-260)

अत: यह नियम है जो हमें अपने सामने रखना चाहिए। अल्लाह तआला ने स्पष्ट फ़र्मा दिया कि जो मुसाफ़िर है और मरीज़ है इस के लिए तंगी नहीं वह बाद में पूरा कर ले लेकिन हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने यह भी फ़रमाया है कि इस हालत में भी फ़िद्या भी ज़रूर दो। इस से रोज़ा रखने की तौफ़ीक़ पैदा होगी।

(उद्धरित मल्फ़ूज़ात भाग 6 पृष्ठ 258)

आजकल वाइरस की बीमारी की वजह से लोग सवाल करते हैं कि गला ख़ुशक हो जाएगा। बीमारी की ज़्यादा संभावना बढ़ जाएगी तो रोज़ा रखें या न रखें। मैं इस बारे में कोई उमूमी फ़तवा या फ़ैसला नहीं देता। मैं यही प्राय लिखता हूँ कि तुम लोग अपनी हालत देखकर ख़ुद फ़ैसला करो और नेक दिल हो कर, तक़्वा पर क़ायम रहते हुए अपने दिल से फ़तवा लो। क़ुरआन करीम की स्पष्ट हिदायत है कि मरीज़ हो तो न रखो। मरीज़ होने के संभावना पर कि मरीज़ बन जाऐंगे रोज़ा छोड़ना यह ग़लत है। जैसा कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया है कि फिर तो एक बहाना से दूसरा बहाना और एक बहाने से दूसरा बहाना बनता चला जाएगा। अगर कोई कहे कि डाक्टर कहते हैं कि यह मुश्किल हो सकती है तो मैं ने विभिन्न माहिर, डाक्टरों से राय ली है। उनकी, डाक्टरों की अपनी राय में भी मतभेद है। कुछ माहिरों ने स्पष्ट लिखा कि यह कोई यक़ीनी बात नहीं है कि रोज़े से बीमारी ज़रूर आएगी। हाँ अगर निशान ज़ाहिर हों ,खांसी या हल्का बुख़ार भी हो तो रोज़ा छोड़ दें या कोई और symptom देखें तो रोज़ा छोड़ दें। अगर रखा हुआ है तो तोड़ दें। डाक्टरों में से भी जो इस बात का रुझान रखते हैं कि नहीं रखना चाहिए या कुछ शर्तें ऐसी लगाते हैं जिस का आख़िर में नतीजा यही निकलता है कि न रखो तो बेहतर है। वे भी स्पष्ट राय नहीं रखते। डराते भी हैं और साथ ही ये भी कहते हैं कि ख़ुराक का ख़्याल रखकर फिर रखे जाएं। अब जो ग़रीब लोग हैं वे किस हद तक ख़ुराक किस चीज़ का ख़्याल रखें।

बहरहाल विभिन्न परामर्शों देखकर तो यही राय क़ायम होती है कि रोज़ा रखने में नक्सान नहीं है। हाँ अगर हल्की सी भी शंका है तो फ़ौरन रोज़ा तर्क कर दें। कुछ का ख़्याल है कि जिस घर में मर्ज़ है और ख़ुद वह शख़्स चाहे सेहत मंद भी हो तो वह भी रोज़ा न रखे लेकिन दूसरे डाक्टर की राय है कि इस का कोई जवाज़ नहीं है। बहरहाल रोज़ा खोलते हुए और रखते हुए पानी का इस्तिमाल करना चाहिए और जो ज़्यादा फ़िक्रमन्द हैं अपने बारे में और afford भी कर सकते हैं वे ऐसी ख़ुराक भी खा लें जो पानी को ज़्यादा देर तक जिस्म में रेटेन (retain) रख सकती है। बहरहाल जब डाक्टरों की राय में मतेभद है जिसमें अमरीका के डाक्टर भी शामिल हैं और जर्मनी के भी और यहां के भी तो फिर यह भी हमें देखना चाहिए कि बिना किसी कारण के रोज़ा छोड़ना कहीं इस अन्तर्गत में न आ जाए जिसके बारे में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया है कि भरोसा करते हैं। हाँ सावधानी अनिवार्य है। कइयों की पानी की requirement वैसे ही कम होती है प्राय पानी नहीं पीते। रोज़े भी रखते हैं प्राय हालात में भी नहीं पीते। हमारे एक बुज़ुर्ग होते थे चौधरी नज़ीर साहिब। वह गर्मियों में सारा दिन फिरते रहते थे। बहुत थोड़ा सा पानी कभी पिया कभी न पिया और हम आते ही पानी की तरफ़ झपटते थे लेकिन उनसे मैं ने कई बार पूछा । कहते थे मेरी पानी की requirement ही कम है। बहरहाल विभिन्न तबीअतें भी होती हैं। इन हालात मैं किस हद तक उस का ख़्याल रखना चाहिए यह बहरहाल अपनी अपनी हालतें और तबीयतें देखकर हर कोई फ़ैसला करे। अपने ज़मीर से फ़तवा ले। और अल्लाह तआला से तौफ़ीक़ मांगते हुए रोज़ा रखने के लिए दुआ करें और दुआएं भी इन दिनों में बहुत ज़्यादा करें कि अल्लाह तआला इन्सानों को अक़्ल भी दे। ख़ुदा तआला को पहचानने वाले हों। अल्लाह तआला इस महामारी को दुनिया से जल्द ख़त्म करे। दुनिया पर रहम फ़रमाए और हम भी, अहमदी भी तक़्वा पर चलते हुए अल्लाह तआला और इस के बंदों का हक़ अदा करने वाले हूँ और रमज़ान की बरकतों से भरपूर फ़ायदा उठाने वाले हों।

यह भी याद रखें आजकल दुनिया के जो हालात हो रहे हैं जब ऐसी महामारी की वजह से दुनिया के आर्थिक हालात भी इंतिहाई ख़राब हो चुके हैं। जब ऐसे आर्थिक हालात आते हैं जैसे आजकल हैं तो फिर जंगों की संभावना भी बढ़ जाती हैं। बहुत से समीक्षक इस तरह की बातें भी कर रहे हैं और फिर दुनियादार हुकूमतें अपने स्वार्थों के हल दुनियावी बहानों से तलाश करने की कोशिश करती हैं और अपनी अवाम का ध्यान बटाने के लिए ऐसी बातें करती हैं जो फिर अधिक मुश्किलों में उनको डालने वाली हूँ। फिर और अधिक तबाही में ये लोग चले जाते हैं और जैसा कि मैंने कहा समीक्षा करने वाले भी इस रंग में करने लग गए हैं। पस अल्लाह तआला बड़ी ताक़तों को भी अक़्ल दे कि वो भी अक़्ल से काम लें और कोई ऐसा क़दम ना उठाएं जिससे दुनिया में मज़ीद फ़साद पैदा हो और दुनिया में मज़ीद तबाही आए। अब तो खुले तौर पर अख़बारों में भी आने लग गया। तबसरा निगार भी कहने लग गए हैं। अमरीका ने ईरान को धमकी दी, चीन पर इल्ज़ाम लगाए जा रहे हैं कि उसने सही सूचना नहीं दी। इस पर मुक़द्दमे होने चाहिऐ। इस के साथ यह व्यवहार होना चाहिए। हम यह कर देंगे। ईरान के साथ हम यह कर देंगे। बहरहाल अमरीका की हुकूमत को भी अक़्ल करनी चाहिए। बाक़ी हुकूमतों को भी अक़्ल करनी चाहिए और इन हालात में बजाय उस के कि कोई ग़लत क़दम उठा कर दुनिया को और अधिक तबाही की तरफ़ ले के जाएं सही सोच के साथ, सही प्लैनिंग कर के और अल्लाह तआला की तरफ़ रुजू करते हुए उस की तरफ़ झुकते हुए अल्लाह तआला से मदद मांगते हुए इस महामारी से बचने के लिए दुआएं करें और कोशिश करें और इस बीमारी के ईलाज के लिए जो भी साईंसदान कोशिश कर रहे हैं उनकी मदद करें। अल्लाह तआला हमें दुआओं की तौफ़ीक़ दे। अपनी हालतों को बेहतर करने की तौफ़ीक़ दे और दुनिया को, दुनियावी बड़ी हुकूमतों को अक़्ल से अपनी पाल्सियां बनाने और भविष्य के कार्य शैली बनाने की तौफ़ीक़ प्रदान फरमाए। आमीन।

(अलफ़ज़ल इंटरनैशनल 15 मई 2020 ई पृष्ठ 5 से 9)

☆ ☆ ☆ ☆

इर्शाद हज़रत अमीरुल मोमिनीन

"अपनी इबादतों को भी विशेष करें और दुनिया को भी इस्लाम की वास्तविक शिक्षा से अवगत कराएं।"

(ख़ुत्बा जुम्अ: 17 मई 2019)

तालिबे दुआ

KHALEEL AHMAD

S/O LATE HAJI BASHEER AHMAD SB AND FAMILY,

JAMAAT AHMADIYYA BIJUPURA, SAHARANPUR (U.P)

पृष्ठ 2 का शेष

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: जब तुम बड़े हो जाओगे तो फिर तुम्हें दुनिया बनाने का और भी उद्देश्य पता लग जाएगा।

एक बच्चे ने सवाल किया कि हम हॉलैंड में अहमदियत किस तरह फैला सकते हैं? इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया तुम्हारा काम यह है कि तुम अच्छे काम करो। तुम बताओ कि मैं अहमदी मुसलमान हूँ। नेक काम करो। नमाज़ का वक़्त हो जाएगी तो टीचर से आज्ञा लेकर स्कूल में नमाज़ पढ़ो। लोग पूछेंगे कि क्या करते हो तो कहो कि इबादत करते हैं और पाँच वक़्त की नमाज़ें पढ़ते हैं। हमें अल्लाह तआला का हुक्म है कि उसकी इबादत करो। नेक काम करो तो लोग attract होंगे। अच्छी बातें करो, शरारतें न करो। ग़लत काम न करो। तो लोगों को ध्यान पैदा होगा कि किस तरह के ये बच्चे हैं कि अच्छे काम करते हैं

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया पढ़ाई में भी अच्छे हो, खेलों में भी अच्छे हो तो ध्यान पैदा हो जाएगा। फिर जब अहमदियत का परिचय हो जाए तो फिर अल्लाह तआला की इच्छा है। दिल तो अल्लाह तआला ने खोलना है। फिर एक वक़्त आएगा जब लोगों के ख़ुद ही ध्यान होंगे, उनको पता होगा कि हमें एक लड़के ने बताया था कि अहमदियत क्या चीज़ है। जो नेक लोग होंगे उनकी ख़ुद ही धर्म की तरफ़ ध्यान पैदा हो जाएगा। ज़बरदस्ती तो किसी को अहमदी नहीं बनाया जा सकता। अल्लाह तआला ने कह दिया है कि ज़बरदस्ती कुछ नहीं करना। हाँ अच्छे काम करो तो लोग अपने आप तुम्हें देखकर तुम्हारी तरफ़ ध्यान करेंगे , फिर रिसर्च करेंगे और फिर किसी वक़्त अहमदी भी हो जाएंगे।

एक ख़ादिम ने सवाल किया कि हुज़ूर को जब फ्री टाइम मिलता है तो इस में हुज़ूर क्या करते हैं? इस के जवाब में हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: सबसे पहले तो मैं कोशिश करता हूँ कि मुझे फ्री टाइम मिल जाए।

एक बच्चे ने सवाल किया कि दुनिया में सबसे पहली चीज़ क्या बनी थी? इस के जवाब में हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: यह तो अल्लाह तआला को पता है कि उसने सबसे पहले क्या बनाया। बहरहाल जब अल्लाह तआला ने ज़मीन बनाई तो यह बड़ी गर्म चीज़ थी, आग थी, कोयला था। फिर धीरे-धीरे इस पर बारिश हुई, ठंडी हुई। दुनिया से मुराद अगर यह ज़मीन है तो यहां पहले आग थी, फिर धीरे-धीरे ठंडी हुई। फिर इस में आबादी आई। इस से पहले अल्लाह तआला ने कितनी ज़मीनें बनाई हैं यह तो अल्लाह तआला बेहतर जानता है। यह जो हमारी दुनिया है, यह भी तो कई अरब साल पुरानी है। लाखों अरब साल पुरानी है। इतनी पुरानी हिस्ट्री कौन जानता है कि पहली चीज़ क्या थी। हाँ यह है कि यह जो ज़मीन की मौजूदा शक्ल है इस से पहले यह आग का गोला थी। फिर धीरे-धीरे यह ठंडी होती गई और इस में आबादी आती गई। पहले बैक्टीरिया पैदा हुए, फिर और जानदार और जानवर पैदा हुए। इस तरह अल्लाह तआला ने evolution से इस दुनिया को आबाद किया

एक बच्चे ने सवाल किया कि जिन वाक़फ़ीन नौ बच्चों को बड़ा हो कर मुरब्बी बनना है लेकिन उनके अंदर अभी मुरब्बी बनने का शौक़ नहीं है , वे क्या कर सकते हैं? इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: किस ने कहा है कि अगर interest नहीं है तो फिर भी मुरब्बी बनना है। ज़बरदस्ती तो कोई नहीं कर रहा। अगर तुम्हारे माँ बाप की इच्छा है कि तुम मुरब्बी बनो और तुम्हारा interest है कि तुम डाक्टर बनो तो डाक्टर बन जाओ, अगर इंजीनियर बनने का शौक़ है तो इंजीनियर बन जाओ,lawyer बनने का शौक़ है तो lawyer बिन जाओ। या अगर कोई और काम करना है तो आज्ञा लेकर कर सकते हो। बेशुमार वाक़फ़ीन नौ हैं। प्रत्येक तो जामिया में जा भी नहीं सकता और जाते भी नहीं। हाँ माँ बाप की इच्छा होती है कि मुरब्बी बने। लेकिन पहली choice तुम्हारी है। अगर तुम्हारा दिल चाहता है या तुम्हारे पास options हैं और तुम्हें नहीं पिता कि क्या बनना है तो फिर पहली option मुरब्बी की होनी चाहिए। फिर डाक्टरज़ हैं, टीचरज़ हैं और जो दूसरे विभाग हैं उनको ले सकते हो।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ के पूछने पर बच्चे ने बताया कि वह मुरब्बी बनना चाहता है। इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया कि तुम तो मुरब्बी बनना चाहते हो तो तुम्हें किस चीज़ की फ़िक्र है? बाक़ी जिसने जो भी बनना है वह बने, मुझे लिख कर बता दिया करो।

एक बच्चे ने सवाल किया कि हुज़ूर अनवर ने कौन सी दुआ की थी कि आप अल्लाह तआला के प्यारे बंदे बन गए हैं? इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया अल्लाह तआला से वैसे ही दुआ करनी चाहिए कि अल्लाह तआला हम से राज़ी हो जाएगी। अगर तुम्हारा विचार यह है कि ख़लीफ़ा बनने के लिए दुआ की थी तो कोई भी यह दुआ नहीं करता। हाँ यह दुआ करनी चाहिए कि अल्लाह तआला हमें नेकियों की तौफ़ीक़ दे, हमें अच्छा अहमदी बनाए, हमें समय के ख़लीफ़ा की बातें मानने वाला बनाए, और नेक काम करने वाला बनाए। यह दुआ किया करो।

एक बच्चे ने सवाल किया कि जब हमसफ़र कर रहे होते हैं और नमाज़ का वक़्त हो जाए तो हम ट्रेन या गाड़ी में ही नमाज़ पढ़ लेते हैं लेकिन हमें ख़ाना काबा के रुख का पता नहीं होता। इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया जब तुम सफ़र कर रहे हो तो इस में आज्ञा होती है। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने आज्ञा दी हुई है। अगर तुम्हें क़िब्ला के रुख का नहीं पता और मजबूरी है तो नमाज़ पढ़ना अधिक ज़रूरी है। इबादत तो अल्लाह की ही कर रहे हो। जहां मजबूरी है वहां तुम पढ़ सकते हो। कोई हर्ज नहीं है। लेकिन नमाज़ वक़्त पर पढ़नी चाहिए। नमाज़ नष्ट नहीं होनी चाहिए

इस बच्चे ने निवेदन किया कि मेरी नज़र बहुत कमज़ोर हो गई है। इस के लिए दुआ की दरख़ास्त करनी थी। इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया कि अल्लाह तआला फ़ज़ल करे। अपनी आँखों की मैडीकल रिपोर्ट लिख कर मुझे भेजो। फिर होम्योपैथी दवाई प्रयोग करना।

एक ख़ादिम ने निवेदन किया कि मेरी एक ईसाई दोस्त से बेहस हो रही थी। वह कह रहा था कि अगर सिर्फ ईसा अलैहिस्सलाम पर ही ईमान ले आओ तो तुम्हें जन्नत प्राप्त हो जाएगी। मैं इसका कोई सही जवाब नहीं दे सका था। इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: उसे कहो कि तुम बिलकुल ठीक कहते हो। तुम कहते हो कि केवल हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम पर ईमान लाओ, हम तो कहते हैं कि सारे नबियों पर ईमान लाओ तो जन्नत मिलती है। हम हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम को भी नबी मानते हैं और उन पर ईमान लाते हैं और उन को अल्लाह तआला का सच्चा नबी मानते आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के आने की उन्हीं की पेशगोई थी जोकि बाईबिल में भी मौजूद है। इस के अनुसार आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को भी मानते हैं। फिर इस से भी बढ़कर आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने आने वाले मसीह की पेशगोई की और हम इस को भी मानते हैं। अल्लाह तआला ने तो क़ुरआन शरीफ़ में लिखा है कि सारे नबियों पर ईमान लाना ज़रूरी है। हम तो ईमान लाते हैं।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया उसे कहो कि अगर तू जन्नत तुम ने देनी है तो न देना। अगर जन्नत अल्लाह तआला ने देनी है तो हम अल्लाह तआला की बात सुनकर ईमान लाते हैं। हाँ , अगर जन्नत तुम्हारे हाथ में है तो हम ऐसी जन्नत नहीं चाहते। इस में बेहस करने की ज़रूरत ही नहीं। कुछ ज़िद्दी आदमी होते हैं।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया कि यह कहाँ लिखा हुआ है कि अगर आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर ईमान ले आओ तो तुम्हें जन्नत मिल जाएगी। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने तो अपनी बेटी को भी फ़रमाया कि अगर तुम ने नेक कर्म न किए तो यह ना समझना कि तुम

रसूल की बेटी हो कर जन्नत में चली जाओगी

अमल से ज़िन्दगी बनती है जन्नत भी जहन्नुम भी

इसलिए अपने कर्म नेक होंगे तो अल्लाह तआला उस का बेहतर reward देता है। बाक़ी अल्लाह तआला की रहमत बड़ी व्यापक है। अल्लाह तआला कहता है कि मैं माफ़ कर देता हूँ। एक शख़्स था जो बहुत गुनहगार था , उसने 99 क़त्ल कर दिए थे। प्रत्येक उसे कहता था तुम दोज़ख़ में जाओगे और जो भी उसे कहता कि तुम दोज़ख़ में जाओगे तो वह उसे भी क़त्ल कर देता। अन्त में किसी ने उसे बताया कि तुम अमुक शख़्स के पास जाओ, वह तुम्हें जन्नत का रास्ता बताएगा। वह इस तरफ़ चल पड़ा। वह चल रहा था कि रास्ता में इस को मौत आ गई। अब वहां जन्नत के फ़रिश्ते भी आ गए और दोज़ख़ के फ़रिश्ते भी आ गए। दोज़ख़ के फ़रिश्ते कहें कि हम ने इसे लेकर जाना है क्योंकि उसने गुनाह किए हुए हैं। जन्नत के फ़रिश्ते कहें नहीं! यह नेकी की तरफ़ जा रहा था, हमने उसे जन्नत में लेकर जाना है। ख़ैर बड़ी बेहस के बाद फ़ैसला हुआ कि फ़ासला नापा जाए। अगर तो जन्नत का रास्ता तलाश करने जिस बुज़ुर्ग की तरफ़ जा रहा था वहां का फ़ासला कम हुआ तो फिर जन्नत में चला जाएगा। लेकिन अगर जहां से आया था वहां से दूरी कम है

तो फिर दोज़ख़ में चला जाएगा। यह हदीस ही है। और जब नापने लगे तो नेकी की तरफ़ जाने वाला जो दूरी था वह कम था और इस तरफ़ उस के क़दम अधिक हो गए तो अल्लाह तआला ने इस को जन्नत में डाल दिया उस के इस सुधारणा पर कि अल्लाह तआला मुझे बख़्श दे और उसने आख़िरी वक़्त तक कोशिश की। तो अंजाम बख़ैर होने की दुआ करनी चाहिए। और इसी पर अल्लाह ने reward देना है। बाक़ी किसी बंदे ने जन्नत में ले कर नहीं जाना है।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया हाँ, अल्लाह तआला ने यह ज़रूर कहा है कि तुम आंहुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को मानो लेकिन उनकी शिक्षा पर भी अनुकरण करो। क़ुरआन शरीफ़ में लिखा हुआ है कि ज़ाहिरी नमाज़ें पढ़ लेना और मुसलमान कह देना काफ़ी नहीं है। क़ुरआन शरीफ़ में लिखा हुआ है फ़वैलुल लिल्मुसल्लीन कि ये नमाज़ें हलाकत का कारण बन जाती हैं। इन नमाज़ों से मार पड़ जाती है। हर चीज़ करो तो फिर अल्लाह तआला के हुक्मों पर अनुकरण करने वाले बनते हो। सिर्फ कलिमा पढ़ने से कोई मुसलमान नहीं हो जाता। ठीक है, शिर्क नहीं करना। शिर्क एक बहुत बड़ा जुर्म है। अल्लाह तआला कहता है कि में नहीं क्षमा करूंगा। लेकिन असल यह है कि मुसलमान हो कर कर्म करना भी ज़रूरी है। जन्नत तथा दोज़ख़ का फ़ैसला अल्लाह तआला ने करना है और वही करेगा। इस दुनिया में कोई नहीं बता सकता कि कौन जन्नत में जाएगा और कौन दोज़ख़ में। इसलिए प्रत्येक समय इस्तिग़फ़ार करनी चाहिए और अपने अंजाम अच्छे होने की दुआ करनी चाहिए।

एक ख़ादिम ने सवाल किया कि क्या हुज़ूर अनवर ने तीसरी विश्वव्यापी जंग के लिए कोई तैय्यारी की है? हमें किस किस्म के measures लेने चाहिऐं

इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया तुम मेरे ख़ुत्बे सुनते हो? मेरे ग़ैरों के साथ बहुत सारे सम्बोधन हैं उनमें मैं कह चुका हूँ कि हम बड़ी तेज़ी से World War III की तरफ़ बढ़ रहे हैं। अब तो दुनिया दार और दूसरे बड़े बड़े लोग भी कहने लग गए हैं। बाक़ी जो measures हैं तो उनके हवाला से मैं पहले ही कह चुका हूँ कि अगर World War III होती है तो हो सकता है कि atomic war भी हो जाएगी। उस के लिए तुम लोग जो कम से कम ज़ाहिरी ईलाज है वह करो। होम्योपैथी दवाई का भी बताया था कि वह खाओ। दूसरा यह कि कुछ देर के लिए, दो तीन महीने के लिए अपना राशन इत्यादि भी अपने पास रखो। जमाअतों को सर्कुलर किया हुआ है कि measures ले लें और खाने पीने का सामान रखें। मैं तो पिछले पाँच, छः साल से कह रहा हूँ। विभिन्न वक़्तों में उसकी ज़रूरत पड़ती भी रही। नेचुरल तूफ़ान और hurricane आते रहे। इन सारी बातों को सामने रखो।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया हम ज़ाहिरी तौर पर यही कर सकते हैं, बाक़ी अल्लाह तआला से दुआ करो कि अल्लाह तआला बचाए। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया था कि जंगें भी हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की सच्चाई के लिए पेशगोई के तौर पर आएं। पहले भी दो world wars हो चुकी हैं। तुम लोग नेक बन जाओ। इस आग से तभी बच सकते हो जब तुम लोग नेकियां करोगे। अल्लाह तआला से सम्बन्ध रखोगे तो अल्लाह तआला तुम्हें बचा ले गाया कम से कम इस हद तक सुरक्षित रखेगा कि अगर कुछ होता भी है तो अल्लाह तआला अगले जहान में तुम लोगों से बेहतर सुलूक करेगा। जब जंगें होती हैं तो उनके एक नेचुरल प्रभाव तो प्रकट होने ही हैं। लेकिन इस से बचने के लिए हम जो ज़ाहिरी कोशिश कर सकते हैं वह करनी चाहिए। radiation से बचने के लिए दवाई है। भूख से बचने के लिए कुछ राशन इत्यादि है। बाक़ी अल्लाह से प्यार करो, अल्लाह से सम्बन्ध रखो। यही सबसे बड़ा measure है

इसके बाद एक ख़ादिम ने सवाल किया कि हमारे मुसलमान देशों विशेषकर जो तरक़्क़ी करने वाले देश हैं उनमें blast इत्यादि भी होते हैं , उनमें कुछ बच्चे यतीम हो जाते हैं। यूरोप में तो ऐसे बच्चों की कफ़ालत की ज़िम्मेदारी हुकूमत ले लेती है लेकिन वहां ऐसा नहीं है। उनके बुरी सोसाइटी में पड़ने के चांसज़ अधिक हो जाते हैं। इस तरह जब वे बुरी सोसाइटी में पड़ते हैं और ग़लत काम करते हैं तो फिर आम तौर पर-विचार जाता है कि अल्लाह तआला की तरफ़ से उन को सज़ा भी मिलेगी और जहन्नुम में भी जाऐंगे। हालाँकि उन बच्चों का तो कोई क़सूर नहीं जब उनके माँ बाप ही उनसे बिछड़ जाते हैं। वे उस वक़्त तो बेगुनाह होते हैं

इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: इसलिए अल्लाह तआला ने क़ुरआन शरीफ़ में हुक्म दिया है कि यतीमों का ध्यान रखो। ऐसे बच्चों को बुरी सोसाइटी में डालने वाले भी गुनाहगार होंगे और उन को इस की सज़ा मिलेगी। बाक़ी अल्लाह तआला का रहमत बड़ा व्यापक है। अगर किसी बच्चा का इस माहौल की वजह से क़सूर नहीं है तो हमें क्या पता कि अल्लाह तआला ने इस के साथ क्या सुलूक करना है? मैंने अभी उदाहरण भी दिया है हर ज़ाहिरी तौर पर अच्छे काम करने वाला जन्नत में जाए और हर बुरे काम करने वाला दोज़ख़ में जाए उस का फ़ैसला तो अल्लाह तआला ने करना है। बाक़ी अल्लाह तआला की रहमत व्यापक है।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया कितने लोग हैं जो बुरी सोसाइटी में जाते हैं? इसी माहौल में पलने वाले बच्चे बेहतर भी निकलते हैं और ख़राब भी होते हैं। इस माहौल में जो यूरोप में रहने वाले हैं यहां तो सारी सुविधाएं उपलब्ध हैं। यहां यतीम-ख़ाने Orphanages बने हुए हैं जो बच्चों को अच्छा रखते हैं तो उनके कौन सा सौ प्रतिशत बच्चे अच्छे काम करने वाले होते हैं। अगर नेकी का स्तर अल्लाह तआला के हुक्मों पर अनुकरण से देखा जाए तो कहाँ लिखा हुआ है कि सारे नेक हैं? सिर्फ पैसा होना तो नेकी नहीं है। रोटी मिल जाना तो नेकी नहीं है। बाक़ी सज़ा या बदला देना अल्लाह तआला का काम है। इस के बारे में हम न जानते हैं और न फ़ैसला कर सकते हैं। अगर किसी का क़सूर नहीं है और माहौल ने इस को ख़राब किया है तो अल्लाह तआला रहमान है जो उस की माफी के सामान अगले जहान में कर सकता है। और वे किस तरह करेगा? यह अल्लाह तआला बेहतर जानता है

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया यहां यूरोप में जो आप उदाहरण दे रहे हैं कि आपने orphanages बना दिए हैं इस की क्या गारंटी है वहां सारे ठीक होंगे। उनके अंदर भी तो चोर, डाकू, उचक्के पैदा होते हैं। अगर यहां ऐसे लोग पैदा नहीं होते तो फिर उन्होंने ऐसे क़ानून क्यों बनाए हुए हैं? यह क़ानून बनाने का उद्देश्य ही यह है कि बुराइयां मौजूद हैं। दूसरा यह कि उनकी नज़र में जो बुराइओं का स्तर है और जो अल्लाह तआला की नज़र में बुराइयों का स्तर है वे विभिन्न है। हाँ अल्लाह तआला ने यह हुक्म ज़रूर दिया है तुम यतीमों को सँभालो, उन्हें पालो। जंगों की वजह से या दूसरी लड़ाइयों के कारण से जो मर जाते हैं और बच्चे यतीम हो जाते हैं , इस ज़माना में जंगें होती थीं इसी लिए इस्लाम में इस वक़्त अधिक शादियों का भी हुक्म था ताकि यतीम बच्चों को पाला जाए। शादियों का एक उद्देश्य यह भी था कि यतीम बच्चों की परवरिश की जाए, यह नहीं था कि मर्द सिर्फ अपनी अय्याशी के लिए शादियां करते रहें। इस्लाम ने यह कहीं नहीं लिखा। इस्लाम ने कुछ नियम रखे हैं। कुछ शर्तें रखी हैं,इन शर्तों के अंदर रह कर शादी की आज्ञा है। प्रत्येक को चार चार शादियां करने की आज्ञा नहीं है। आप खड़े हो जाएं कि मैं मुसलमान हूं और मैं चार शादियां कर लूं। और इस देश का क़ानून बड़ा ख़राब है। मुझे चार शादियां करने की आज्ञा नहीं देता। आपकी चार शादियों का उद्देश्य भी पूरा होना चाहिए। कोई वजह चाहिए।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया क़ुरआन

अल्लाह तआला का उपदेश

رَبَّنَآ اِنَّنَآ اٰمَنَّا فَاغْفِرْ لَنَا ذُنُوْبَنَا وَقِنَا عَذَابَ النَّارِ (आले इम्रान 17)

हे हमारे रब्ब निसन्देह हम ईमान ले आए

अतः हमारे गुनाह माफ कर दे और हमें आग के अज़ाब से बचा।

तालिबे दुआ

MUHAMMAD MAJEED AND FAMILY

AMEER DIST: ROUPR. PUNJAB

इर्शाद हज़रत अमीरुल मोमिनीन

"अगर तुम चाहते हो कि तुम्हें दोनों दुनिया की फत्ह हासिल हो और लोगों के दिलों पर फत्ह पाओ तो पवित्रता धारण करो, और अपनी बात सुनो, और दूसरों को अपने उच्च आचरण का नमूना दिखाओ तब अलबत्ता सफल हो जाओगे।"

तालिबे दुआ

धानू शेरपा

सैक्रेट्री जमाअत अहमदिया देवदमतांग (सिक्कम)

करीम में अल्लाह तआला ने बार-बार नसीहत भी की है कि वे लोग जो यतीम की परवरिश नहीं करते, उस का विचार नहीं रखते उन को मैं जहन्नुम में डालूँगा। अल्लाह तआला ने यतीम की तो बात की ही नहीं कि वे जहन्नुम में जाएगा। यतीम जो ख़राब होता है, उस को ख़राब करने की वजह बनने वाला जहन्नुम में जाएगा। अल्लाह तआला की रहमानियत भी तो बहुत व्यापक है। जो इंतिहाई शिर्क करने वाला है अल्लाह तआला ने कहा है कि मैं इस को नहीं क्षमा करूंगा। दूसरी तरफ़ एक स्थान कहा कि एक वक़्त ऐसा आएगा जब जहन्नुम बिलकुल ख़ाली हो जाएगी। इसलिए जन्नत के मज़े तो सारे ले लेंगे। लेकिन थोड़ी बहुत सज़ा इन्सान अपने किए की पाता है। बाक़ी हुकूमत का काम है, और इस माहौल का काम है और लोगों का काम है कि उनको सम्भालें। अगर वह नहीं सँभालते तो यतीमों के पास तो बहाना है कि वे कह देंगे कि हमें कोई सँभालने वाला नहीं था तो अल्लाह तआला उनका बहाना शायद मान ले। लेकिन जिन्होंने नहीं पाला, उनका बहाना नहीं माना जाएगा। वे ज़रूर अपने किए की सज़ा पाएँगे। ज़ाहिर में अल्लाह तआला की बातों से यही लगता है। बाक़ी तो हम किसी के बारे में कुछ नहीं कह सकते। इसलिए क़ुरआन शरीफ़ को बार-बार पढ़ो। क़ुरआन शरीफ़ में यतीम को पालने के बारे में बहुत नसीहत की है।

एक ख़ादिम ने सवाल किया कि जमाअत climate change के बारे में क्या भूमिका अदा कर सकती है? इस के जवाब में हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: ख़ुद्दामुल अहमदिया वाले एक पौधा लगाकर समझते हैं कि हम ने climate चेंज कर दिया है। या लज्ना ने चार दरख़्त लगा दिए या अन्सारुल्लाह ने लगा दिए। सवाल यह है कि अब जिस तरह आबादी बढ़ रही है, इस आबादी के लिए ज़मीन चाहिए। जब ज़मीन चाहिए होगी तो ज़ाहिर है जो जंगल हैं, दरख़्त हैं वे कम होंगे। जंगल की Percentage कम है। इसलिए दरख़्त लगाते रहना चाहिए। इसलिए इन देशों में कहते हैं कि तीस या चालीस प्रतिशत जंगल होना चाहिए। लेकिन पाकिस्तान जैसे देश हैं जहां सिर्फ चोर इकट्ठे हुए हैं और जंगल काट काट कर बेच दिए और और अधिक लगा नहीं रहे वहां बुरे प्रभाव पैदा होंगे। अत: यही है कि अधिक से अधिक लोगों को , जहां हमारे संसाधन हैं उनके द्वारा लोगों को awareness देने की कोशिश करें। दरख़्त अधिक करें। greenery अधिक करें।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया और बाक़ी यह कि दुनिया जिस तरह तरक़्क़ी कर रही है कि यहां भी आना हो तो कार में बैठ कर आ जाते हैं। इसलिए कार्बन emission को कम करें। डच लोग साईकल चलाते हैं, आप भी अधिक साईकल चलाया करें। आप लोगों ने ज़रा सा भी कहीं जाना हो तो कारों पर चले जाते हैं। हमारे पाकिस्तान से आने वाले अधिकतर इसी तरह हैं।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया अत: यही काम हैं जो कर सकते हैं। एक तो plantation अधिक करो बाक़ी दुनिया में जो तरक़्क़ी हो रही है इस के मुक़ाबला में हमारे पास तो इंडस्ट्री नहीं है। इसलिए हमारी क्या भूमिका हो सकता है। हमारे पास कोई ऐसा कारख़ाना होगा जिस की चिमनी से smoke निकल कर pollution पैदा करेगा तो फिर हम भी कुछ करेंगे। अभी जमाअत के पास तो कोई ऐसी चीज़ नहीं है। बाक़ी जो कर सकते हैं वे भूमिका तो अदा कर ही रहे हैं

एक ख़ादिम ने सवाल किया कि'नाकामी की क्या परिभाषा है? या कौन सा ऐसा शख़्स है जो इस दुनिया में असफल कहलाएगा? या जो अपने आपको नाकाम समझे? इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने निम्नलिखित शेअर पढ़ा

मायूस व ग़मज़दा कोई उस के सिवा नहीं
क़ब्ज़ा में जिस के कब्ज़ सैफ़ ख़ुदा नहीं

इस के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: अल्लाह तआला से दुआ किया करो। नाकामी का किया है? मायूसी ही नाकामी होती है। बाक़ी आदमी अपनी पूरी कोशिश करे और फिर उस के लिए जितनी दुआ कर सकता है करे। इस के बाद जो परिणाम हैं वह अल्लाह तआला पर छोड़ दे। वह समझे कि फिर अल्लाह तआला की इच्छा है। उसकी वजह से मायूसी पैदा नहीं होती। मायूसी ही नाकामी होती है। बाक़ी अल्लाह तआला बेहतर जानता है कि हमारे लिए क्या बेहतर है। नाकामी की definition क्या है? आप समझते हैं कि एक चीज़ आपको ज़रूर मिलनी चाहिए। आपने उस के लिए पूरी कोशिश की, इस के जो बातें अनिवार्य हैं वे पूरे किए , जो मेहनत थी वह की, और इस मेहनत के साथ फिर दुआ की। एक मोमिन का यही काम है। एक नास्तिक सिर्फ मेहनत करता है और इस को इस का reward मिल जाता है। एक मोमिन सिर्फ मेहनत करेगा तो इस को reward नहीं मिलेगा जब तक अल्लाह तआला को शामिल न करे। या फिर कह दे कि मैं अल्लाह को मानता ही नहीं हूँ , नास्तिक हूँ। अत: जब एक अहमदी हो कर अल्लाह को मानते हो तो फिर मेहनत भी करने पड़ेगी और दुआ भी करनी पड़ेगी। और जब दुआ करो और मेहनत करो और फिर उस के परिणाम न हों तो फिर अल्लाह तआला दिल में डाल देता है कि यह तुम्हारे लिए बेहतर नहीं है। या फिर तसल्ली हो जाती है कि जो भी होगा, मेरे लिए बेहतर होगा। इस तरह मायूसी होती ही नहीं। इसलिए नाकामी की definition हिसाब के फार्मूले की तरह तो नहीं बता सकते। बहरहाल मायूस नहीं होना। पूरी मेहनत करो, अपनी सारी potential है , सलाहीयतें हैं , संसाधन हैं उनको काम में लाओ और फिर दुआ करो। फिर अल्लाह तआला पर मामला छोड़ दो।

वाकफ़ीन नौ बच्चों की हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ के साथ यह क्लास 8 बजे ख़त्म हुई। इस के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने नमाज़ मग़रिब तथा इशा जमा करके पढ़ाई। नमाज़ों की अदायगी के बाद हुज़ूर अनवर अपनी रिहायश गाह पर तशरीफ़ ले गए।

1अक्तूबर 2019 ई (दिनांक मंगल)

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने सुबह साढ़े6 बजे मस्जिद बैयतुन्नूर में तशरीफ़ ला कर नमाज़ फ़ज्र पढ़ाई। नमाज़ की अदायगी के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ अपनी रिहायश गाह पर तशरीफ़ ले गए। सुबह हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने दफ़्तरी डाक, ख़ुतूत और रिपोर्टें देखीं और हिदायतों से नवाज़ा और हुज़ूर अनवर दफ़्तरी मामले को पूरा करने में व्यस्त रहे।

फ़ैमिली मुलाक़ातें

प्रोग्राम के अनुसार सुबह साढ़े 11 बजे हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ बैयतुन्नूर तशरीफ़ लाए और फ़ैमिली मुलाक़ातें शुरू हुईं। आज सुबह के इस सैशन में 37 फ़ैमिलीज़ के 140 लोगों ने अपने प्यारे आक़ा से मुलाक़ात का सौभाग्य पाया। प्रत्येक ने हुज़ूर अनवर के साथ तस्वीर बनवाने का सौभाग्य भी पाया। हुज़ूर अनवर ने दया करते हुए शिक्षा प्राप्त करने वाले छात्र और छात्राओं को क़लम प्रदान फरमाए और छोटी उम्र के बच्चों और बच्चियों को चॉकलेट प्रदान फरमाए। मुलाक़ात करने वाली यह फ़ैमिलीज़ हॉलैंड की विभिन्न जमाअतों से थीं।

आज मुलाक़ात कारने वाली फ़ैमिलीज़ में से बड़ी संख्या और अधिकतर उन लोगों की थी जो पाकिस्तान से यहां आए थे और अपनी ज़िन्दगी में पहली बार अपने प्यारे आक़ा से मिल रहे थे। यह सभी बहुत ख़ुश थे कि उनकी ज़िन्दगियों में आज एक ऐसा मुबारक दिन आया है कि उन्हें अपने प्यारे आक़ा का इंतिहाई निकट

इर्शाद हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफतुल मसीह ख़ामिस

ख़िलाफत का निज़ाम भी अल्लाह तआला और उस के रसूल के आदेशों और निज़ाम का हिस्सा है।

(ख़ुत्बा जुम्अ: 24 मई 2019 ई)

तालिबे दुआ

मुहम्मद शुएब सुलेजा पुत्र जनाब मुहम्मद ज़ाहिद सुलेजा मरहूम तथा फैमली, अहमदिया जमाअत कानपुर(उत्तर प्रदेश)

हदीस नबवी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम

खड़े होकर नमाज़ पढ़ो और अगर खड़े होकर संभव न होतो बैठ कर और अगर बैठ कर भी संभव न हो तो पहलु के बल लेट कर ही सही।

तालिबे दुआ

Sohail Ahmad Nasir and Family

Jamaat Ahmadiyya Adra,Dist: Puruliya. West Bengal

से दर्शन नसीब हुआ और उन्होंने अपने आक़ा के क़ुरब में जो कुछ क्षण गुज़ारे वे उनकी सारी ज़िन्दगी का सरमाया थे। उनमें से प्रत्येक बरकतें समेटते हुए बाहर आया। प्रत्येक ने अपने प्यारे आक़ा से दुआएं पाईं। दिल का सन्तोष पाया। दर्शन की प्यास बुझी और यह कुछ मुबारक क्षण उन्हें हमेशा के लिए तृप्त कर गए।

एक फ़ैमिली जब मुलाक़ात करके बाहर आई तो उनके बच्चों की आँखों में भी आँसू थे, ख़ुशी के आँसू थे, क़लम हाथ में पकड़े हुए थे कि हुज़ूर अनवर ने प्रदान फरमाए हैं। यही आँसू उन के लिए आबे हयात हैं। यही ज़िन्दगी का पानी हैं। इसी से जहां धर्म सँवरेगा वहां दुनिया भी सँवरेगी। इन आँसूओं को, इन मुबारक क्षणों को अपने दिलों में सजा कर रखें तो हम अपनी मुराद को पा गए और फिर हमारी नसलें भी इन बरकतों से फ़ैज़ पाएँगी

मुलाक़ातों का यह प्रोग्राम 2 बजे तक जारी रहा। इस के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला अपनी रिहायश गाह पर तशरीफ़ ले गए

Almere शहर में "मस्जिद बैयतुल आफियत" का उद्घाटन

आज प्रोग्राम के अनुसारAlmere शहर में "मस्जिद बैयतुल आफियत " के उद्घाटन का प्रोग्राम था। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ साढ़े 4 बजे अपनी रिहायश गाह से बाहर तशरीफ़ लाए और नन स्पैट से अलमेरे के लिए रवानगी हुई। नन स्पैट से अलमेरे शहर का दूरी 50 किलोमीटर है।

Almere शहर सूबा Flevoland में स्थित है। इस शहर को 1971 ई में समुंद्र के एक हिस्सा को सुखा करके आबाद किया गया था। 49साल पहले यहां सिर्फ समुंद्र था और आज एक ख़ूबसूरत शहर आबाद है। यह शहर लगभग एक लाख चौरासी हज़ार लोगों को समोए हुए यहां Lelysted के क्षेत्र में साल 2007 ई में जमाअत की स्थापना हुई था और अब जमाअत को यहां मस्जिद बनाने की तौफ़ीक़ मिली है।

लगभग 50 मिनट के सफ़र के बाद 5 बजकर 20 मिनट पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला की "मस्जिद बैयतुल आफियत" तशरीफ़ आवरी हुई। जमाअत के लोग मर्दो औरतों ने बड़े जोश भरे अंदाज़ में अपने प्यारे आक़ा का स्वागत किया। बच्चियां अपने हाथों में हॉलैंड का क़ौमी झण्डा थामे हुए, स्वागत गीत प्रस्तुत करते हुए अपने प्यारे आक़ा को स्वागत कह रही थीं। हर तरफ़ एक ख़ुशी का माहौल था।

जैसे ही हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ गाड़ी से बाहर तशरीफ़ लाए तो अलमेरे जमाअत के सदर हनीफ़ अहमद साहिब, मुबल्लिग़ सिलसिला सफ़ीर अहमद सिद्दीक़ी साहिब ने हुज़ूर अनवर को स्वागत कहा। हुज़ूर अनवर ने अपना हाथ ऊंचा करके सबको अस्सलामो अलैकुम कहा।

इस के बाद हुज़ूर अनवर ने मस्जिद के बाहरी दरवाज़ा के अंदर दीवार में लगी तख़्ती की निक़ाब कुशाई फ़रमाई और दुआ करवाई। दुआ के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला मस्जिद के मर्दाना हाल में तशरीफ़ ले गए और नमाज़ ज़ुहर तथा असर जमा करके पढ़ाई। जिसके साथ मस्जिद का नियमित उद्घाटन हुआ।

नमाज़ों की अदायगी के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ लाइब्रेरी हाल में तशरीफ़ ले आए जहां प्रैस कान्फ्रैंस का आयोजन हुआ। हुज़ूर अनवर के आने से पहले इलैक्ट्रॉनिक और प्रिंट मीडिया और सोशल मीडिया के प्रतिनिधि लाइब्रेरी हाल में मौजूद थे और हुज़ूर अनवर के आने की प्रतीक्षा कर रहे थे।

प्रैस कान्फ्रैंस

आज की इस प्रैस कान्फ्रैंस में हॉलैंड के क़ौमी अख़बार De Volkskrant के पत्रकार, क्षेत्रीय ऑनलाइन अख़बार Zwolle Nieuws के पत्रकार, क्षेत्रीय Omroep Flevoland T.V के जर्नलिस्ट, यूरो टाईम्स बेल्जियम के प्रतिनिधि और अन्य प्रतिनिधि मौजूद थे

सबसे पहले Mr Ben van Raaij जो कि एक क़ौमी अख़बार De Volkskrant के प्रतिनिधि हैं उन्होंने अलमेरे में मस्जिद के उद्घाटन पर मुबारकबाद दी। जिस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने उनका शुक्रिया अदा किया। इस के बाद महोदय ने सवाल किया कि क्या जमाअत अहमदिया के लिए पाकिस्तान में मस्जिद बनाना संभव है? इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: पाकिस्तान का क़ानून हमें कोई भी ऐसा काम करने की आज्ञा नहीं देता जिसका सम्बन्ध इस्लामी रिवायतों से हो। इसलिए क़ानून के अनुसार हम वहां मस्जिदें नहीं बना सकते बल्कि हम जमाअत विरोधी लागू होने वाले इस क़ानून से पहले भी जो मस्जिदें बनी थीं उनको भी "मस्जिद" नहीं कह सकते।

इसी पत्रकार ने पूछा कि पाकिस्तान में पिछले साल नई हुकूमत आई है। कुछ लोगों का विचार है कि यह नई हुकूमत धार्मिक अक़ल्लीयतों के बारे में अधिक लिबरल है लेकिन कुछ लोगों का विचार है कि इस हुकूमत के लिए कुछ भी करना अधिक मुश्किल है क्योंकि उनको कुछ ऐसे ग्रुपों का समर्थन प्राप्त रहा है जोकि धार्मिक अक़ल्लीयतों के ख़िलाफ़ हैं। मौजूदा हुकूमत और पाकिस्तान में धार्मिक आज़ादी के माहौल के बारे में आप की क्या राय है? इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: अगर आप पाकिस्तानी लोगों की नफ़सियात देखें तो पता लगता है कि पाकिस्तानी बड़ा धार्मिक होने का दावा करते हैं। यही वजह है कि पाकिस्तान में साधारण लोग तथा कथित उल्मा या मौलवियों के हाथ में हैं। बेशक यह उल्मा जिनके हाथ में मस्जिद के मेम्बर हैं उनके पास कोई स्यासी ताक़त नहीं है लेकिन फिर भी वे अवाम को बाहर गलियों में ला सकते हैं। इसलिए जो भी पार्टी गर्वनमैंट में आकर दावा करती है कि वह लिबरल है लेकिन वे मौलवी से भयभीत होते हैं क्योंकि वह अवाम को बाहर गलियों में ला सकते हैं। इसलिए जब तक मौलवी का भय मौजूद है आप यह नहीं कह सकते कि हुकूमतें वे सब कर सकती हैं जो वे चाहती हैं।

इस पत्रकार ने पूछा कि क्या आप पाकिस्तान जा सकते हैं? इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया हाँ मैं पाकिस्तान जा सकता हूँ लेकिन इस शर्त पर कि मैं बिलकुल ख़ामोश रहूं। मैं वहां जाकर ख़ुद को मुसलमान न कहूं और कोई भी ऐसा काम न करूँ जो कि इस्लामी शिक्षाओं के अनुसार है। इसलिए अहमदिया मुस्लिम जमाअत के रहनुमा होने की वजह से मैं पाकिस्तान नहीं जाना चाहता। अगर मैं ने वहां क़ानून की वजह से ख़ामोश ही रहना है तो फिर वहां जाने का क्या लाभ

पत्रकार ने पूछा कि आपके विचार में हालात को बेहतर बनाने का क्या तरीक़ा धारण किया जा सकता है? इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: जब तक वहां अहमदियों को ग़ैर मुस्लिम क़रार देने वाला क़ानून मौजूद है, और क़ानून है कि For the purpose of law and constitution, Ahmadis are not Muslims और फिर यह क़ानून ज़िया उल-हक़ की मार्शल ला रिजीम (Regime) के द्वारा और अधिक सख़्त कर दिया गया था। अब हम वहां" अस्सलामो अलैकुम" भी नहीं कह सकते , अपनी मस्जिदों को "मस्जिद" नहीं कह सकते। जैसा कि मैंने कहा कि किसी भी तरीक़ा या कर्म से या इशारा से भी मुसलमान होने का इज़हार नहीं कर सकते। इसलिए जब तक यह क़ानून मौजूद है, किसी किस्म की बेहतरी आने की कोई उम्मीद नहीं है। और इस समय किसी स्यासी पार्टी या हुकूमत के अंदर इतना साहस नहीं है कि वह इस क़ानून को ख़त्म कर दे।

दुआ का अभिलाषी
जी.एम. मुहम्मद शरीफ़
जमाअत अहमदिया मरकरा (कर्नाटक)

इस्लाम और जमाअत अहमदिया के बारे में किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए संपर्क करें

नूरुल इस्लाम नं. (टोल फ्री सेवा) :
1800 3010 2131
(शुक्रवार को छोड़ कर सभी दिन सुबह 9:00 बजे से रात 11:00 बजे तक)
Web. www.alislam.org, www.ahmadiyyamuslimjamaat.in

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e-mail : badarqadian@gmail.com
www.alislam.org/badr

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN PUNHIN/2016/70553
Weekly BADAR Qadian
Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA
POSTAL REG. No.GDP 45/ 2020-2022 Vol. 5 Thursday 28 May 2020 Issue No.22

MANAGER :
NAWAB AHMAD
Tel. : +91- 1872-224757
Mobile : +91-94170-20616
e-mail:managerbadrqnd@gmail.com

ANNUAL SUBSCRIBTION: Rs. 500/- Per Issue: Rs. 10/- WEIGHT- 20-50 gms/ issue

इस के बाद क्षेत्रीय ऑनलाइन अख़बार Zwolle nieuws के पत्रकार Mr Rein Tuininga ने सवाल किया कि यहां हॉलैंड में अहमदी मुसलमानों के हवाला से आप क्या कहते हैं? इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: यहां हॉलैंड में अहमदी मुसलमानों की अधिकतर स्यासी पनाह लेने वालों की है जोकि पाकिस्तान से हिजरत करके इस देश में पहुंचे हैं। इस के अतिरिक्त कुछ सुरेनाम के भी अहमदी हैं जोकि भूतकाल में डच कॉलोनी होने की वजह से यहां आबाद हैं। लेकिन अहमदियों की अधिकतर का सम्बन्ध पाकिस्तान से है जो कि स्यासी पनाह लेने वाले हैं। अत: हम यहां इसी लिए हैं कि यहां की हुकूमत ने हमें अपने अक़ीदा का इज़हार करने, इस पर अनुकरण करने और इस की तब्लीग़ करने की आज्ञा दी हुई है। इस वक़्त हमारी जमाअत की अधिकतर पाकिस्तानियों पर आधारित है। जहां तक भविष्य का सम्बन्ध है तो संस्थापक जमाअत अहमदिया इसलिए मबऊस हुए कि उनका उद्देश्य ही इस्लाम की वास्तविक शिक्षाओं की तब्लीग़ करना था और लोगों को इस्लाम की वास्तविक शिक्षाओं से आगाह करना था। और वह वास्तविक शिक्षाओं प्यार, अमन और भाईचारा हैं। इन्हीं चीज़ों की हम तब्लीग़ कर रहे हैं। इसी लिए कई बार डच लोगों में से भी हमारी जमाअत में दाख़िल होते हैं। बल्कि इस वक़्त हॉलैंड जमाअत के मौजूदा सरबराह भी एक हैं।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया अत: क़ुरआन कहता है कि धर्म में कोई जबर नहीं है लेकिन दूसरी तरफ़ यह भी कहा कि लोगों को समझाया जाए कि क्या ग़लत और क्या ठीक है। एक धार्मिक जमाअत और एक धार्मिक इन्सान होने की हैसियत से यह हमारी ज़िम्मेदारी है कि हम अपने धर्म की तब्लीग़ करें। अत: जिन को यह धर्म पसंद आता है वे इस तरफ़ आ जाते हैं। हमें उम्मीद है कि लोग आएँगे। सिर्फ हॉलैंड में ही नहीं बल्कि सारे पश्चिमी देशों में अगर यह नस्ल नहीं तो अगली नस्ल इस्लाम की तरफ़ आएगी। हम इस हवाला से बहुत आशावादी हैं कि लोग इस्लाम स्वीकार कर लेंगे और अपने ख़ालिक़ के पहचानने वाले हो जाएंगे

इस के बाद एक क्षेत्रीय टीवी Omroep Flevoland के एक पत्रकार Mr Menno Hoeboer ने कहा कि आप के लिए आज का दिन काफ़ी ख़ुशी का दिन होगा? इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: बिलकुल ठीक बात है। हम जब भी मस्जिद का उद्घाटन करते हैं तो हमारे लिए वह दिन बड़ी ख़ुशी का कारण होता है। आज के ख़िताब में भी मैं इस मस्जिद के उद्घाटन के हवाला से अपने भावनाओं और विचारों का ज़िक्र करूंगा।

इसी पत्रकार ने निवेदन किया कि क्या आपने मस्जिद देखी है? मस्जिद के बारे में आपका क्या विचार है? इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: अभी मैंने सारी इमारत तो नहीं देखी। मैं ऊपर मस्जिद के हाल में गया था। वह तो बहुत अच्छा लग रहा था। बहरहाल अपने संसाधन को सम्मुख रखते हुए हम बहुत बड़ी मस्जिद तो बनाने नहीं कर सकते बल्कि कौंसल भी हमें बड़ी मस्जिद बनाने करने की आज्ञा ना देती। जब हमने इस क्षेत्र में मस्जिद बनाने करना शुरू की थी तो हमारी जमाअत की संख्या बहुत कम थी लेकिन अब मुझे पता चला है कि संख्या में भी वृद्धि हो रही है। इसलिए अगर सारे यहां जमा हों तो मेरे विचार में जमाअत के साथ नमाज़ के लिए यह मस्जिद काफ़ी नहीं होगी। बहरहाल वैसे मस्जिद बहुत ख़ूबसूरत है। नक़्शा की दृष्टि से बहुत अच्छी है। मेरे विचार में इस सवाल का जवाब आपको देना चाहिए कि आप को मस्जिद कैसी लगी? क्या यह मस्जिद आप के architectural design में पूरी हो गई है

पत्रकार ने पूछा कि यह मस्जिद इतनी विशेष क्यों है कि आप यहां ख़ुद उस का उद्घाटन करने के लिए तशरीफ़ लाए? इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: हमारी यहां एक छोटी सी जमाअत है और मैं कभी-कभार यहां आता हूँ। एक लंबे समय के बाद अल्लाह तआला ने हमें यह मस्जिद अता फ़रमाई है। इसलिए यहां की जमाअत के लोगों की इच्छा थी और

पृष्ठ 1 का शेष

की वजह एक आम ज़हरीला रस्म का प्रभाव का है। इसी वजह से अल्लाह तआला की मुहब्बत कम हो रही है और इबादत में जिस किस्म का मज़ा आना चाहिए वह मज़ा नहीं आता। मैं कोई ऐसी चीज़ नहीं जिसमें लज़्ज़त और एक विशेष आन्नद अल्लाह तआला ने रखा न हो। जिस तरह पर एक मरीज़ एक उत्तम से उत्तम स्वाद वाली चीज़ का मज़ा नहीं ले सकता और वह उसे कड़वा या बिलकुल फीका समझता है इसी तरह वे लोग जो इलाही इबादत में मज़ा और लज़्ज़त नहीं पाते उन को अपनी बीमारी की फ़िक्र करना चाहिए क्योंकि जैसा मैंने अभी कहा है दुनिया में कोई ऐसी चीज़ नहीं है जिसमें ख़ुदा तआला ने कोई न कोई आन्नद न रखा हो अल्लाह तआला ने मानव जाति को इबादत के लिए पैदा किया तो फिर क्या वजह है कि इस इबादत में इस के लिए आन्नद और मज़ा न हो। लज़्ज़त और मज़ा तो है मगर इस से मज़ा उठाने वाला भी तो हो अल्लाह तआला फ़रमाता है

وَمَا خَلَقْتُ الْجِنَّ وَالْاِنْسَ اِلَّا لِيَعْبُدُوْنِ (अज़्ज़ारियात :57)

अब इन्सान जब कि इबादत ही के लिए पैदा हुआ है। ज़रूरी है कि इबादत में लज़्ज़त और आन्नद भी उच्च स्तर का रखा हो। इस बात को हम अपने दैनिक के मुशाहिदा और अनुभव से ख़ूब समझ सकते हैं। जैसे देखो अनाज और समस्त खाने और पीने की वस्तुएं इन्सान के लिए पैदा की हैं तो क्या उन से वे एक आन्नद और मज़ा नहीं पाता? क्या इस ज़ायक़ा , मज़ा और एहसास के लिए उस के मुँह में ज़बान मौजूद नहीं। क्या वह ख़ूबसूरत इश्यों को देखकर पेड़ पौधे हों या पत्थर । हैवान हों या इन्सान आन्नद नहीं पाता? क्या दिल को ख़ुश करने वाली और सुरीली आवाज़ों से इस के कान आनन्दित नहीं होते? फिर क्या कोई दलील और भी इस बात के प्रमाण के लिए अभीष्ट है कि इबादत में आन्नद न हो

अल्लाह तआला फ़रमाता है कि हम ने औरत और मर्द को जोड़ा पैदा किया और मर्द को रग़बत दी है। अब इस में ज़बरदस्ती नहीं की बल्कि एक आन्नद भी दिखलाया है। अगर केवल नस्ल का पैदा करना ही अन्नदा का अभीष्ट होता तो लक्ष्य पूरा न हो सकता। औरत और मर्द के आपसी हालत में उनकी ग़ैरत क़बूल न करती कि वे एक दूसरे के साथ सम्बन्ध पैदा करें मगर इस में उन के लिए एक मज़ा है और एक आन्नद है। यह हज़ और लज़्ज़त इस स्तर तक पहुंची है कि कुछ बुरा चाहने वाला इन्सानी औलाद की भी परवाह और ख़्याल नहीं करते बल्कि उनको सिर्फ आन्नद ही से काम और लक्ष्य है। ख़ुदा तआला का लक्ष्य बंदों का पैदा करना था और इस कारण के लिए एक सम्बन्ध औरत और मर्द में स्थापित किया और इसी के अन्तर्गत इस में एक आन्नद रख दिया जो अक्सर नादानों के लिए आन्नद का मूल लक्ष्य हो गया है। इसी तरह से ख़ूब समझ लो कि इबादत भी कोई बोझ और टैक्स नहीं। इस में भी एक लज़्ज़त और आन्नद है और यह लज़्ज़त और आन्नद दुनिया के समस्त लज़्ज़तों और नफ़्स के समस्त मज़ों से उच्चतर है। जैसे औरत और मर्द के आपसी मसम्बन्धों में एक आन्नद है और इस से वही लाभान्वित हो सकता है जो मर्द अपनी पूर्ण शक्तियां रखता है। एक नामर्द और मुख़न्नस वह आन्नद नहीं पा सकता और जैसे एक मरीज़ किसी उम्दा से उम्दा उत्तम स्वाद वाली ग़िज़ा की लज़्ज़त से वंचित है इसी तरह पर हाँ ठीक ऐसा ही वह कम्बख़्त इन्सान है जो इलाही इबादत से लज़्ज़त नहीं पा सकता।

(मल्फ़ूज़ात भाग 1 पृष्ठ 136 से139 प्रकाशन 2008 कादियान)

☆ ☆

मेरी भी इच्छा थी कि मैं यहां आकर मस्जिद का उद्घाटन करूँ। जर्मनी में भी हम हर साल चार, पाँच मस्जिदें का उद्घाटन करते हैं। मैं वहां भी जाता हूँ। जहां जा सकता हूँ वहां जाता हूँ। इस तरह मेरी स्थानीय अहमदी लोगों से मुलाक़ात भी हो जाती है। उनकी हौसला-अफ़ज़ाई हो जाती है और उनके इमाम जमाअत के साथ सम्बन्ध में भी मज़बूती पैदा होती है और इस से उनको रूहानियत में तरक़्क़ी करने का भी अवसर मिलता है।

(शेष.....)

☆ ☆

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India. Editor:Shaikh Mujahid Ahmad